कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्षः13, अंकः 02 नवम्बर 2013

आईएसएसएन संख्याः 2321–9645

मुख्य संरक्षक

श्री बुद्धिसेन शर्मा

संरक्षक सदस्य

डॉ0 तारा सिंह, मुंबई

श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया,उ.प्र.

सम्पादक

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

प्रबंध सम्पादक

श्रीमती जया

विज्ञापन प्रबंधक

महेन्द्र कुमार अग्रवाल

ब्यूरो

ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी

सहयोग राशि

एक प्रति	: रु0 10/–
वार्षिक	: रु0 110/–
पंचवर्षीय	: रु0 500/–
आजीवन सदस्य	: रु0 1500/–
संरक्षक सदस्य	: रु0 5000/–

संपादकीय कार्यालय

एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 का0: 09335155949

ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं।

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस, बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से idkf'kr djk;k x;kA

if=dk esa idkf'kr fdlh Hkh jpuk ds fy, ys[kd Lo;a ftEesnkj gksxkA if=dk ifjokj] izdk'kd ;k laiknd dk blls dksbZ ysuk nsuk ugha gksxkA fookn ds lanHkZ esa U;k;ky; {ks= bykgkckn gksxkA

इस अंक में......

आखिर कब तक?

-अरुण कुमार आनन्द, संभल.................... 06

राष्ट्रीय एवम् भावात्मक एकता में भारतीय भाषाओं की भूमिका

-डॉ० बी.जी. हिरेमठ...................08

वैचारिकीः रवि कान्त खरे 'बाबाजी' 10

महान मानवतावादी और दार्शनिक-पं०नेहरूजी

-मन मोहन सिंह-.....................11

दर्द का हद से गुज़रना है दवा हो जाना

-सीताराम गुप्ता 13

स्थायी स्तम्भ

प्रेरक प्रसंग 04

अपनी बातः चुनावों में अब मतदाता नकारात्मक वोट दर्ज करा सकेंगे 05

बाल मंचः राकेश दाधीच, शोभित दाधीच, सुष्मिता दाधीच 15

हिन्दीतर भाषीः कविता-बालाराम परमार 18

कविताएंः

श्री कृष्ण अग्रवाल, रामकुमार वर्मा, राम सहाय बरैया, प्रोमिला भारद्वाज, ए. कीर्तिबर्द्धन 19–20

कहानीः गुलेन्दी-मोहन आनन्द तिवारी 21–23

अध्यात्मः जीवन के उस पार -डॉ० अरुण कुमार आनंद.............24–25

साहित्य समाचार- 16,17, 27–28, 30–32,

स्वास्थ्य 26

आपकी डाक 29

लघु कथाएँः श्री बिहारी 'सागर', किशन लाल शर्मा 33

समीक्षा 34

आनन्द

आनन्द के अर्थ हर व्यक्ति के अपने अलग-अलग होते हैं. कुछ इसे समृद्धि, सम्पन्नता से जोड़कर देखते हैं तो किसी के लिए अपने मित्रों एवं परिवार के सदस्यों, सम्बन्धियों का स्नेहील अपनत्व ही आनन्द देता है. विभिन्नता यहीं नहीं रूकती, कुछ व्यक्ति अपने सारे व्यक्तित्व सारे बंधन से मुक्त रखना चाहते हैं. उनके लिए जीवन का सुख ही स्वतन्त्रता है तो कुछ भगवद भक्ति के माध्यम से चिरानन्द की तलाश करते हैं. यह तो व्यक्ति विशेष का अपना निर्णय है कि वह आनन्द प्राप्ति के किस मार्ग को चुनता है परन्तु उपरोक्त सभी मार्गो के द्वारा आनन्द प्राप्ति से पूर्व आपको यह तो अवश्य ही निश्चित करना होगा कि आपके किसी भी कार्यकलाप से किसी अन्य के आनन्द में बाधा न आए या समाज में या आपके आसपास के माहौल में कोई नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न न हो. परिपक्वता का यही मानदण्ड आपको, आपके संगी-साथियों के साथ समाज को भी एक सच्चे आनन्द की अनुभूति कराएगा, निश्चित जानिए.

-**पी.एस.भारती,** बरेली, उ.प्र.

कोरी कल्पना जीवन का परिहास है. कल्पना के साथ उसे चरितार्थ करने हेतु, परिश्रम, लगन का होना आवश्यक है. कल्पना जीवन का सुमार्ग बताती है, किन्तु कोरी कल्पना जीवन में असफलता लाती है.

सत्य की विजय स्थायी होती है, असत्य की क्षणिक.

सत्य की परीक्षा बड़ी कड़ी होती है, धैर्य से समय की प्रतीक्षा करनी पड़ती है. बीच में हिम्मत हारने से बिगड़ता है.

जिस सत्य पथ का अनुसरण तुमने किया है उस पर चले जाओ, यह मत देखों तथा सुनो कि दुनिया तुम्हें मूर्ख तथा पागल कहती हैं. यह तो संसार है यहां तो टीका टिप्पणी होती ही है.

सत्य मार्ग में कांटे ही कांटे है, इनकी तिल मात्र भी परवाह न करो, समय आने पर यही कांटे फूल बन जायंगें.

मन की गति विलक्षण है, जब जिस बात पर क्रोधित, दुःखित तथा हर्षित हो जाता है. इस बहुरूपिये का कोई ठिकाना कोई लक्ष्य नहीं.

भूमिगत हलचल से भूचाल आता है, सामान्य वातावरण अस्त व्यस्त कर देता है, उसके बाद वही वातावरण सामान्य होने लगता है. मन का भूचाल भी ऐसे ही अपने पर मन को झकझोर डालता है और उत्कट प्रभाव प्रगट करता हैं.

आज हम यह निश्चय करते हैं कि अमुक कार्य नहीं करेंगें. पुनः करने लगते हैं क्यों? यह सब असंयत मन के कारण होता है, हम अपने मन पर अधिकार नहीं कर पाते और प्रलोभन के वशीभूत होकर पुनः पुनः शिकार होते रहते हैं.

-दाउजी

आदाब अर्ज़ है

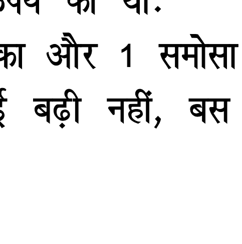

10 साल पहले एक समोसा 50 पैसे और एक मोबाईल कॉल 8 रुपये का था. आज 1 काल 50 पैसे का और 1 समोसा 8 रुपये का है। मंहगाई बढ़ी नहीं, बस इधर उधर हो गयी है।

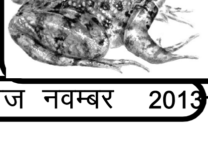

-दाऊ जी की डायरी से

चुनावों में अब मतदाता नकारात्मक वोट दर्ज करा सकेंगे

सुप्रीम कोर्ट ने 27 सितम्बर 2013 को 'आगामी चुनावों के दौरान वोटिंग मशीन में किसी भी प्रत्याशी को न चुनने वाला बटन भी होगा' का चुनाव सुधार में ऐतिहासिक फैसला सुनाया. कोर्ट ने चुनाव आयोग को इस बाबत तैयारी करने के निर्देश दिए हैं. अदालत के अनुसार 'मतदाताओं के पास चुनाव लड़ रहे प्रत्याशियों को अस्वीकार करने का कानूनी अधिकार है, जिससे उन्हें वंचित नहीं रखा जा सकता. कोर्ट ने कहा कि लोकतंत्र पसंद का मसला है और इसमें नकारात्मक मतदान के अधिकार का काफी महत्त्व है. चुनावों में अब लोगों को वोटिंग मशीन पर एक बटन मिलेगा, जिसे दबाकर वे अपना नकारात्मक वोट दर्ज करा सकेंगें. कोर्ट ने केन्द्र सरकार को भी आदेश दिया कि वह वोटिंग मशीन में 'नो' का बटन लगाने के बारे में चुनाव आयोग को पूरी सहायता दे. कोर्ट ने यह फैसला एक एनजीओ 'पीयूसीएल' की याचिका पर दिया.

इस फैसले का मकसद-

- राजनीतिक दल सही उम्मीदवार खड़ा करने के लिए मजबूर होंगे.
- मतदान में भी बढ़ोतरी होने की उम्मीद है.
- नकारात्मक बोलने और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रत के मौलिक अधिकार का हनन होने से बचाया जा सकेगा.
- मतदाता के लिए मजबूरी में किसी प्रत्याशी को चुनने की बाध्यता नहीं होगी और नेताओं के लिए राह मुश्किल हो जाएगी.

इसके पहले मेरे जैसे और एक समान सोच के लोग जो हमेशा यह सोचकर परेशान रहते थे कि वोट देते समय उन्हें अपना मत प्रकट करने का मौका नहीं मिलता. वास्तव में हमारे पास कोई विकल्प ही नहीं था. यदि कुछ उम्मीदवार हैं जो दागी हैं और आपराधिक पृष्ठभूमि वाले हैं, लेकिन इसके बावजूद लोगों को या तो उनसे कम दागी का विकल्प चुनना पड़ता था या फिर उनके पास मतदान केन्द्र से बिना मतदान किए खाली हाथ लौटने का ही रास्ता था. ज्यादातर लोग इस बात से समझौता कर बैठे थे कि वोट देने का कोई फायदा नहीं है क्योंकि वोट देकर वे उनके ही हाथ मजबूत करेंगे जो सरकार चलाने योग्य नहीं है.

लेकिन कोर्ट को इस फैसले के साथ ही साथ इस पर ध्यान देना होगा कि

- नई स्थिति में 20 फीसदी वोट हासिल करने वाला व्यक्ति चुना हुआ घोषित किया जाएगा?
- नापसंदगी ज्यादा होने पर भी जीतेगा उम्मीदवार
- यदि नकारात्मक वोटों की संख्या उम्मीदवारों को पड़े वोटो से ज्यादा हुई तो क्या होगा? चुनाव रद्द हो जाएगा या फिर से चुनाव करवाया जाएगा?
- यदि नकारात्मक वोटों की संख्या विजयी प्रत्याशी को प्राप्त मतों से ज्यादा हुई तो यह हार ही होगी क्योंकि बहुमत उनके खिलाफ होगा. क्या ऐसी परिस्थिति में प्रत्याशी को वापस बुलाने का विकल्प नहीं होना चाहिए?

खैर, जो भी माननीय सर्वोच्च न्यायालय के इस फैसले का पुरजोर स्वागत किया ही जाना चाहिए. एक कदम बात आगे तो बढी. ..

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

- कर्मचारियों के लिए ६० वर्ष में सेवानिवृत्त करने का प्रावधान है, मगर इन नेताओं के लिए यह लागू नहीं होता?
- भारत की सत्ताव्यवस्था का व्यापारीकरण हो गया है. कभी उन्हें रुपयों से तोला जाता है, कभी अपने पक्ष में मतदान एवज में तरह-तरह के लोक लुभावन वादे किए जाते हैं.

आखिर कब तक?

-डॉ० अरूण कुमार आनन्द
उर्फ स्वामी अरूणानन्द जी महाराज
चन्दौसी, सम्भल, उ.प्र.

भारत के राजनैतिक नेताओं ने जो विशेषकर सत्तारूढ़ है अपने वोट बैंक को बरकरार रखने के लिए समाज को जातिवाद, वर्गवाद, वर्णवाद और क्षेत्रवाद में बांट कर रख दिया है. जैसे अनुसूचितजाति- जनजाति, अल्पसंख्यक, पिछड़ा वर्ग, सवर्ण वर्ग आदि. कुछ वर्ग तो ऐसे हैं जिन्हें सरकार व हमारे सत्तारूढ़ राजनैतिक नेता गत 60 वर्ष से किसी न किसी रूप में उनकी मदद करते नजर आते हैं. सरकारी कर्मचारियों के लिए 60 वर्ष की सीमा में सेवानिवृत्त करने का प्रावधान है, मगर इन नेताओं के लिए यह प्रावधान लागू नहीं होता? विचारणीय विषय है. जबकि कानून बनाने और सदन में पास करवाने वाले लोग भी इस कानून के दायरे में आते हैं तो उन्हें भी 60 वर्ष की आयू में लोक सेवा से सेवानिवृत्त हो जाना चाहिए था, चाहे वे देश के राष्ट्रपति-प्रधानमंत्री या मुख्यमंत्री, सांसद/विधायक किसी भी पद क्यों न हो, है तो सरकारी प्रतिनिधि? इस मद में इनका करोड़ो में सौदा होता है, केवल बहुमत प्राप्त करने के लिए इन्हें खरीदा जाता है तो यह कहना अनुचित न होगा कि भारत की सत्ताव्यवस्था का व्यापारीकरण हो गया है. कभी उन्हें रुपयों से तोला जाता है, कभी जनता को पक्ष में मतदान करने के एवज में तरह-तरह से लोक लुभावन वादे कर सब्जबाग़ दिखाया जाता है, कभी सस्ता राशन बांटा जाता है तो कभी लैपटाप बांटा जाता है. क्या लैपटाप निर्धन गरीब को दो जून की रोटी, कपड़ा या रोजगार देगा? कभी कर्ज माफ करने की घोषणा किया जाता है, क्या यह सब सरकार की संवैधानिक घोषणाएं है? फिर भी इन पर करोड़ो-अरबों सरकारी रुपया बर्बाद किया जा रहा है. क्या भारत की जनता को इस व्यवस्था पर विचार कर अंकुश लगाने की जरुरत नहीं है? बिना संसद में विधेयक पास हुए भी ऐसी ऊल-जूलूल योजना में अरबों-खरबों रुपया खर्च हो रहा है? क्या यह घोटालों के दायरे में नहीं आता? देश के उच्चतम न्यायालयों को इस पर भी विचार एवं निर्णय करना चाहिए? आखिर कब तक होता रहेगा यह खेल? पिछली उत्तर प्रदेश सरकार में मुख्यमंत्री मायावती ने अरबो सरकारी रुपयों से हाथी-घोड़े व स्मारक बनवाने का विधेयक विधानसभा से पारित था? नहीं तो सरकारी धन का दुरुपयोग करने का अधिकार मायावती को किसने दिया? इसी प्रकार अखिलेश यादव अरबों रुपयों का लैपटाप बांट रहे हैं? क्या यह सरकारी धन का दुरुपयोग वोट बैंक बनाने के लिए नहीं किया जा रहा है? क्या समाजवादी पार्टी ये समझती है कि भारत की जनता बेवकूफ है? इन कुकृत्यों की भी सीबीआई जांच होनी चाहिए. कुछ मंत्रियों, नेताओं की नेतागिरी ऐसी है कि समाज जहां पहले था आज भी वहीं पर है. जातिवाद वर्गवाद की आड़ में प्रत्येक सत्तारूढ़ सरकार ताली ठोक कर बहुत सी योजनाएं घोषित करती है. फिर भी आम जनता जहां के तहां कि स्थिति में है, प्रत्येक योजना पर सरकार का अरबों रुपये खर्च होता है. योजनाएं फाईलों तक सिमट कर समाप्त हो जाती है. जरुरत मंद के खाते में एक रुपया तक नहीं पहुंचता. राजनैतिक नेताओं और उच्चाधिकारियों की तिजोरियों में बंद हो जाते हैं. यह उनके लिए कामयाब व्यवसाय है. मुफ्त में हजारों रुपयों की सरकारी सुविधाएं भी मंत्रीयों और नेताओं को मिलती है. आम जनता को क्या मिला? ऐसी है हमारे भारत की लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था? क्या इस व्यवस्था को बदलने की जरूरत नहीं है? यदि है तो लोकसभा चुनाव में जनता को विचार करना चाहिए, ऐसे लोगों के पक्ष में मतदान करें जो व्यवस्था परिवर्तन के लिए संघर्ष कर रहे हों ना कि मंत्री बनने के लिए. सत्तारूढ़ नेताओं की सुरक्षा में ही राजकोष का काफी धन खर्च हो जाता है. इन प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर किसी के पास क्यों नहीं है? भारत का आधा तबका किसान मजदूर है जो मेहनत मजदूरी करता है. उनके

पास दो जून की रोटी और सिर छुपाने को छत तक नहीं है. अपना रोजगार चलाते हैं, कारखानों में उत्पादन करते हैं, कहीं नौकरी करते हैं. सरकार उन पर टैक्स पर टैक्स लगाती रहती है. सौ डेढ़ सौ रुपये रोज कमाने वाला अपने परिवार का भरण-पोषण करेगा या टैक्स देगा? ऊपर से मंहगाई इतनी की मत पूछिए. ऐसी परिस्थिति में चोरी डकैती, लूट-खसोट आदि अपराध तो बढ़गें ही? भूखा, मरता क्या न करता वाली लोकोक्ति चरितार्थ होती है. ऊपर से मशीनरी व्यवस्था ने रोजगार पर विराम लगा दिया है. जहां दस मजदूर काम करते थे वहां अब जेसीबी मिनटों में कर देता है, तो फिर देश का मानवीय विकास कैसे हुआ? इसे मानवीय विनास ही कहा जायेगा? सरकारी खजाने में जो विभिन्न स्रोतों से इक्ट्ठा होता है उसे या तो नेता खा जाते हैं या बीच के दलाल चाट जाते हैं. बचा खुचा बिचौलिए हड़प कर जाते हैं या निर्धन गरीब की आड़ में उन लोगों को बांट दिया जाता है जो पहले से ही धन-कूबेर है.

देश में एक ऐसा वर्ग भी सक्रिय है जो सिर्फ दलाली करता है चाहें वह राजनैतिक दलाली, सामाजिक दलाली, सांस्कृतिक दलाली यहां तक की अब तो धार्मिक कर्मकाण्डों में दलालों का प्रवेश हो गया है. ऐसे निकम्मे लोग राजनीति-सरकार और पुलिस में पहुंचेगे तो देश में भ्रष्टाचार और घोटाला होगा हीं? उनकी सोच केवल यह रहती है कि किसको कैसे लूटा जाये. वे चाहते हैं कि सरकारें सब्सिडी, पेंशन, आवास, नौकरी दें ताकि दलाली का धंधा फूलता फलता रहें. और दबंगई जमाने का हक मिले. उनसे उसी प्रकार व्यवहार किया जाये जो राजनैतिक मंत्रियों से किया जाता है. बिचौलिया का अर्थ होता है नर और नारी के बीच का आदमी, इनका न कोई दीन होता है न ईमान धर्म, यह तो भगवान से भी दलाली लेने से नहीं चूकते तो इन्सानों से क्या चूंकेगें? आज लगभग हर आदमी दलाल बन गया है. अपना इमान, धर्म यहां तक कि अपना मताधिकार तक एक बोतल दारू में दबंगों को बेच देता है तो सरकार में शिखण्डी ही तो पहुंचेगें?

जब एक ठेकेदार एक बिल्डिंग बनाने के लिए सैकड़ो मजदूर इकट्ठा कर लेता है, उन्हें मजदूरी भी देता है तो क्या यह कार्य सरकार नहीं कर सकती, किसी भी योजना के शुरू करने से पूर्व पहले उसमें छेद तलाश करते हैं, और आमदनी का आकड़ा निकालते हैं. यदि कोई छेद नहीं है तो उसे पारित करवाने में अड़गा लगाते हैं. लोकपाल और लोकायुक्त मामले में भी ऐसा ही हैं. जिसे कोई भी राजनैतिक दल पास होने देना नहीं चाहता. अगर इन नेताओं की नियत साफ हो तो कोई भी विधेयक बिना हो-हल्ला के पास हो सकता है और अच्छी तरह से लागू भी हो सकता है.

अन्ना हजारे जी द्वारा प्रस्तुत व लोकसभा में विचारार्थ विधेयक पूर्ण नहीं है. 1956 का लोकपाल विधयेक बेहतर था उसके प्रावधान ऐसे थे जिससे राजनीतिक व्यवस्था स्वतः ही परिवर्तित हो जाती. लेकिन उसे वर्तमान विधेयक से हटा दिया गया है. अन्ना हजारे का लोकपाल विधेयक भी अधूरा है. इस लोकपाल विधेयक से राजनीतिक व्यवस्था परिवर्तन होना संभव हीं नही हैं. इसे हम अन्नाजी को लाईट में आने का एक साधन ही मान सकते हैं. श्री अन्ना हजारे के लोकपाल विधेयक को आज तक जनता में विस्तारपूर्वक सार्वजनिक नहीं किया गया है तो अन्ना हजारे राजनीतिक व्यवस्था परिवर्तन का दावा कैसे कर सकते हैं? देश में एक समय ऐसा भी आएगा कि जनता अन्ना हजारे जी को भी अवसरवादी नेताओं में गिनने लगेगी?

एक तरफ मंहगाई तो दूसरी तरफ टैक्सों की भरमार. आम आदमी टैक्स देगा या अपने परिवार का भरण-पोषण करेगा? ऐसी परिस्थिति में चोरी डकैती, लूट-खसोट आदि तो बढ़गें ही? सरकारी खजाने में जो विभिन्न स्रोतों से इक्ट्ठा होता है उसे या तो नेता खा जाते हैं या बीच के दलाल चाट जाते हैं. बचा खुचा बिचौलिए हड़प कर जाते हैं या निर्धन गरीब की आड़ में उन लोगों को बांट दिया जाता है जो पहले से ही धन-कूबेर है.

यह देश का दुर्भाग्य है कि आज भी इण्डियन भारतीयों पर राज्य कर रहे हैं.

रामकृष्ण गर्ग, इलाहाबाद

राष्ट्रीय एवम् भावात्मक एकता में भारतीय भाषाओं की भूमिका

किसी भी देश की संस्कृतिक, साहित्यिक विरासत उस देश की भाषाओं में विद्यमान रहती है. वही भाषाएं उस देश की भावनाओं, संस्कारों को परिष्कृत और परिलक्षित करती है.

भारत की राष्ट्रीय, भावात्मक एकता तथा देश की अखंडता को बनाए रखने, अनेकता में एकता स्थापित करने के लिए एक राष्ट्रभाषा का होना आवश्यक है. जिस प्रकार किसी देश का राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगीत एक होता है, उसी प्रकार राष्ट्रभाषा भी एक ही होनी चाहिए.

✍डॉ० बी.जी. हिरेमठ,
बेगलौर, कर्नाटक

अपनी धरती, अपना अंबर, अपना हिंदुस्तान।
अपनी हिंदी, अपनी संस्कृति, अपना सदाचार।।

माता एवम् मातृभूमि के पश्चात महत्वपूर्ण स्थान मातृभाषा का ही होता है. जिससे व्यक्ति, समाज, देश के स्वाभिमान गौरव की पहचान होती है. किसी भी देश की संस्कृतिक, साहित्यिक विरासत उस देश की साहित्यिक भाषाओं में विद्यमान रहती है. वही भाषाएं उस देश की भावनाओं, संस्कारों को परिष्कृत और परिलक्षित करती है. एक बार आचार्य विनोबा भावेजी ने कहा था कि यदि मैंने हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं का सहारा न लिया होता, तो काश्मीर से कन्याकुमारी तक, और आसाम से गुजरात तक, गांव-गांव जाकर, मैं भूदान और ग्रामदान आंदोलनों का क्रान्तिकारक संदेश जन-मानस तक नहीं पहुंचा सकता था.

भारत बहुभाषा-भाषी विशाल देश है. इस विशाल राष्ट्र में अनेक प्रान्त है. हमारे देश में संविधान से मान्यता प्राप्त अनेक भाषाएं और उपभाषाएं है. इन राज्य सरकारों तथा केन्द्र सरकार में संपर्क स्थापित करने के लिए, एक राजभाषा या राष्ट्रभाषा का होना नितांत आवश्यक है. भारत की राष्ट्रीय एकता, भावात्मक एकता तथा देश की अखंडता को बनाए रखने के लिए अनेकता में एकता स्थापित करने के लिए एक राष्ट्रभाषा का होना आवश्यक है. जिस प्रकार किसी देश का राष्ट्रध्वज एक होता है, राष्ट्रगीत भी एक ही होता है, उसी प्रकार राष्ट्रभाषा भी एक ही होनी चाहिए.

दो सौ वर्षो की अंग्रेजों की दासता से देश तो आजाद हुआ, किंतु अंग्रेजीयत की मानसिक दासता अभी भी हमारी संस्कृति और सभ्यता पर हावी है. मानव सभ्यता के उदय के साथ भाषा-चेतना के उद्भव और विकास का आरंभ हुआ. राष्ट्रीय एवं भावनात्मक एकता और सभी भाषायी सामंजस्य के लिए यह अनिवार्य भी है कि बहुभाषिकता के मध्य ऐक्य का खोज करना आवश्यक भी है. यह प्रक्रिया आसान नहीं है, यद्यपि असाध्य भी नहीं है. राष्ट्रीय एकता के परिप्रेक्ष्य में भारतीय भाषाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है. भारत बहुभाषी देश होने पर भी यहां के हर प्रान्त की प्रांतीय भाषा अपनी गौरवशाली परम्परा लिए हुए है. भाषावार प्रान्तों की रचना के बाद, आशा किया गया था कि उससे भारतीय समाज का आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के साथ-साथ राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता का विकास होगा. लेकिन उसका परिणाम आशा के विपरित हुआ जो देश के सर्वोतामुखी उत्थान और सर्वागीण विकास के लिए वरदान बनना चाहिए था, लेकिन वह एकता के लिए अभिशाप बन गया.

वस्तुतः भाषाएं केवल विचार विनिमय के साधन मात्र नहीं, बल्कि वे मानव के चरित्र का, समाज का और राष्ट्र के चरित्र का भी उद्घाटन करती है. एक भाषा की अस्मिता और दूसरी भाषा की अस्मिता के बीच संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो रही है. उससे राष्ट्रीय एकता पर स्वाभाविक रूप से परिणाम हो रहे हैं. उसका मूल कारण देश की शिक्षण नीति, जो हमें मैंकाले ने अंग्रेजी शिक्षा पर जोर देकर दिया था. अतः शिक्षण-प्रणाली में सुधार करना अत्यंत आवश्यक है. एक ओर भारतीय भाषाएं राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता के लिए महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है, तो दूसरी ओर समाज में तनाव विद्वेष, द्वंद, विघटन, प्रवृत्ति को बढ़ावा दे सकती है. मूलतः भारतीय भाषाएं देश की संस्कृति संस्कार एवं देश की एकता के लिए रीढ़ की हड्डी का काम करती है. मजहब अलग-अलग सही, वतन तो एक है। बोलियां अलग-अलग सही राष्ट्रभाषा हिन्दी तो एक है।

प्रागैतिहासिक काल से समस्त भारत वर्ष को एक अखंड भूभाग के रूप में मानते हुए आ रहे हैं. अतः जंबु द्वीपे भरतवर्षे भरतखंडे जपने का क्रम चलते आया है. कोई भी किसी जाति-पाति, धर्म-ग्रन्थ, भाषा भेद आदि का भेद-भाव नहीं करना चाहिए. मनुष्य मननशील

और चिंतशील है. भाषा बहुत शक्तिशाली होती है. भाषा के सृजन के बिना संस्कृति की कल्पना भी नहीं कर सकते. भाषा बिना जागृति ही नहीं स्वप्न भी संभव नहीं, क्योंकि स्वप्न भी भाषाश्रयी है. भाषा के बिना संस्कृति लिपिबद्ध नहीं हो पाती. भाषा गतिशील हैं भाषा कभी भी सांप्रदायिक अथवा आंचलिक नहीं होती. हम टालस्टाय रवीन्द्रनाथ, गोर्की आदि विद्वानों को पढ़कर समझने का प्रयत्न करते तो वह हमारे हृदय की भाषा जैसे लगती है. एक संस्कृति, एक देश और एकता की परिकल्पना भाषा ही हमें सिखाती हैं. पवित्र भारत भूमि पर जन्म लेकर हमारी संस्कृति, हमारी एकता को मजबूत बनाने में देश की सभी भाषाओं का योगदान रहा है. मातृभाषा और मातृभूमि की अस्मिता को निश्चित करने में भारतीय भाषाओं का पात्र महत्वपूर्ण है. प्रस्तुत समय में राष्ट्रीय एकता एवं भावात्मक एकता को कायम रखने में सभी भाषाओं के लेखकों की सूझ-बूझ पर निर्भर रहता है. अब समय का तकाज़ा है कि हम अपने आपको, तमिल, पंजाबी, बंगाली या हिंदू, मुसलमान ईसाई कहने के बदले, मैं भारतीय हूं का कहना आवश्यक है.

मैं भारतीय हूं इस स्वाभिमान को भारतीय भाषा में ही चितन, मनन करना है. देश की सभी भाषाएं, जैसे सभी फूल देव योग्य होते हैं, वैसे ही सभी भाषाएं देश को एकता को कायम रखने में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाति है. इतिहास हो साहित्य हो, सामाजिक परिवर्तन की शिवधारा में वाणी यानी भाषा की सर्वशक्तिशाली है.

भारत में भाषाओं की विविधता है, लेकिन अनादि काल से, भौगोलिक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अलग-अलग होते हुए भी भारत देश की अखंडता अक्षुण्ण है और रहेगा. भाषा और संस्कारों की सीमाएं कितनी भी सीमित हो लेकिन दक्षिण भारतवासी गंगा, हिमालय के दर्शनार्थ उत्तर भारत की यात्रा करेगा और उत्तर भारतवासी रामेश्वरम, कन्याकुमारी के दर्शनार्थ दक्षिण भारत की यात्रा करेगा. आज भी यह भावना जीवित है. यही भावात्मक एकता का प्रतीक है. यह भक्तिभाव जनमानस में युग-युग से भरा हुआ है, और सदैव रहेगा. हम भाषा काा एक स्वतंत्र व्यक्तित्व रहता है, लोगों के हृदयों में प्रवेश करके उनकी वाणी पर पर विकसित होती है.

> भाषा कभी भी सांप्रदायिक अथवा आंचलिक नहीं होती. एक संस्कृति, एक देश और एकता की परिकल्पना भाषा ही हमें सिखाती हैं.
> अब समय का तकाज़ा है कि हम अपने आपको, तमिल, पंजाबी, बंगाली या हिंदू, मुसलमान ईसाई कहने के बदले, मैं भारतीय हूं कहें.

भारत के चिंतन और दर्शन का मूल श्रोत भारतीय भाषाएं है. इन्हीं भाषाओं के द्वारा भारत की आत्मा को पहचाना जा सकता है. इतिहास साक्षी है कि देश पर जब-जब संकट आया था, तब-तब सभी भारतीय अपने भाषा-भेद, वर्ग-भेद आदि विभिन्न भावनाओं को मिटाकर एक हो गए थे, और विदेशी दुश्मनों की शक्ति का डटकर मुकाबला किया था और करेंगे. फिर प्रश्न उठता है कि इस प्रकार के संकट के शिकार क्यों हो रहे हैं? आ बैल उसे मार वाली स्थिति के शिकार हुए हैं. एक ओर हम विश्व एकता की बात करते हैं, अपने उच्च आदर्शो का प्रमाण देते हैं, और दूसरी ओर एक भाषा का दूसरी भाषा से द्वेषपूर्ण नजरों से देखा करते हैं. भारतीय भाषाओं में एकता की भावना की कमी नहीं बल्कि राजकयी नेताओं में अपने स्वार्थ-साधना के खातिर, लोगों के बीच ईर्ष्या-द्वेष निर्माण करते हैं और कृत्रिम दिखावा करते हैं. राजकीय नेताओं में एकता कायम करने की इच्छाशक्ति की कमी दिखाई देती है. भारतीय भाषाओं में एकता की भावना की कमी नहीं है. व्यक्ति और समाज के निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण इकाई भाषा ही है. वह संस्कार देती है और हमारे सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित करती है. भारतीयता और भारतीय भाषाओं की रक्षा करना प्रत्येक भारतीय का आद्य कर्त्तव्य है. भारत में भारतीय भाषाओं के बिना स्वाभिमान और असिमता की बात सोची भी नहीं जा सकती.

राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता में भारतीय भाषाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है. इस सम्बंध में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी की यह काव्योक्ति सराहनीय है.

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हियको सूल।।

हमारे देश में आत्मविश्वास एकता, श्रेष्ठता का भाव, आदर्श तथा सिद्धातों की कमी नहीं है. अन्त में मैं राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी के काव्य की मार्मिकता की ओर ध्यान आकर्षित करता हूं.

जिनको न निज भाषा तथा निज देश का अभिमान।
वह नर नहीं है पशु है मृतक समान।।

वैचारिकी

→ जनतंत्र सफल हो रहा है. कौन नहीं जानता असलियत? सशस्त्र क्रान्ति की ओर धीरे-धीरे बढ़ रहे हैं लोग.

→ आखिर क्या सोचते हैं देश व समाज के वर्तमान कर्णधार? आखिर कौन-सा व कैसा विचार छोड़ जाना चाहते हैं वे मार्गदर्शन हेतु भावी कर्णधारों के लिए?

✍ **रवि कान्त खरे 'बाबाजी'**
लखनऊ, उ.प्र.

विभिन्न रूपों में बेईमानी, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, करापवंचन, दुराचार, अपराध, अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न, अपराधीकरण, आतंकवाद, अव्यवस्था, आदि की स्थिति से सभी परिचित हैं. पहले लोग विभिन्न प्रकार के घोटालों से परिचित नहीं थे, पर अब हो गये हैं. देश की वर्तमान राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक दयनीय स्थिति का ज्ञान सभी को है. सभी जानते हैं कि स्वतन्त्रता उच्छृंखलता में तबदील होती जा रही है और लोकतंत्र लूटतंत्र बनता जा रहा है. विवशता यह है कि लोकतंत्र को छोड़ा नहीं जा सकता, क्योंकि अन्य कोई शासन-प्रणाली उपयुक्त नहीं है. इस विवशता के तहत घिसट-घिसट कर और सिसक-सिसक कर चल रहा है जनतंत्र किसी प्रकार. फिर भी दावा किया जाता है कि जनतंत्र सफल हो रहा है. कौन नहीं जानता असलियत? सशस्त्र क्रान्ति की ओर धीरे-धीरे बढ़ रहे हैं लोग. अनेक भीषण एवं ज्वलन्त समस्याएं घेरे हुए हैं समाज व देश को. निदान सूझ नहीं रहा है. मंहगाई और बेरोजगारी की भीषण आपदा से कोई अनभिज्ञ नहीं है, पर किंकर्त्तव्यविमूढ़ता की सी स्थिति विद्यमान है.

यह संभव है कि व्यक्ति यह समझ बैठे कि उसकी उन्नति बेईमानी एवं भ्रष्टाचार का दामन थामने से हो सकती है, किन्तु यह असंभव है कि कोई यह माने कि समाज व देश की उन्नति बेईमानी एवं भ्रष्टाचार से हो सकती है. आखिर क्या सोचते हैं देश व समाज के वर्तमान कर्णधार? आखिर कौन सा व कैसा विचार छोड़ जाना चाहते हैं वे मार्गदर्शन हेतु भावी कर्णधारों के लिए? सत्य यह है कि व्यक्ति जिस अंश तक बेईमानी एवं भ्रष्टाचार के मार्ग पर चलेगा, समाज में उतनी ही अवनति परिलक्षित होगी. आज समाज में जो विषमता एवं दुर्दशा दीख रही है, वह व्यक्ति के दूषित विचार एवं कदाचार का ही परिलक्षण है. व्यक्ति के लिए खुशहाली हासिल करने का मार्ग और समष्टि की उन्नति सुनिश्चित करने का मार्ग अलग-अलग नहीं हो सकता. जो बेईमानी एवं भ्रष्टाचार के फावड़े चला रहे है, वे समझ व जान लें कि वे निश्चित रूप से अपने लिए भी और समष्टि के लिए भी गिरावट हेतु गड्ढा खोद रहे हैं. इस परिप्रेक्ष्य में अपराध-बोध होना प्रथमतः आवश्यक है.

व्यक्ति, समाज और देश गिरावट की स्थिति से उबरे तथा प्रगति के मार्ग पर अग्रसर हो, यह सभी चाहेंगे, किन्तु कोई क्रान्तिकारी परिवर्तन तभी संभव होगा जबकि उक्त चाहना प्रबल हो, उसकी पूर्ति की दिशा में सद्प्रयास हो और सद्प्रयास में निरन्तरता हो. निरन्तर सद्प्रयास करने के अतिरिक्त आज की विषम स्थिति एवं परिस्थिति से निपटने, उबरने तथा उन्नति का मार्ग प्रशस्त होने का अन्य कोई उपाय नहीं है. बेईमानी एवं भ्रष्टाचार के चलते तो अन्ततः सब कुछ चौपट हो जाएगा. वास्तविक उपलब्धि तो तब होगी जब व्यक्ति स्वयं अपनी जगह सुधरने की भरपूर ईमानदारीपूर्ण प्रयास करेगा. विडम्बना यह है कि व्यक्ति स्वयं में सुधार लाने हेतु सद्प्रयास नहीं करता और चल पड़ता है दूसरों को सुधारने. परिणाम स्वरूप न वह स्वयं सुधर पाता है और न दूसरों को सुधार पाता है. बेईमान, भ्रष्ट, अनैतिक और आपराधिक प्रवृत्ति का व्यक्ति न अपने लिए, न समाज व देश के लिए उपयोगी हो सकता है.

आज सामाजिक सुरक्षा एवं समरसता का प्रश्न अहम है. बदमाशों से आज जनता भयभीत रहती है. अवांछनीय तत्वों की बढ़ती हुई अनुचित, अधार्मिक एवं आपराधिक गतिविधियों को देखते हुए सुरक्षा की समुचित व्यवस्था किए जाने की मांग उठना स्वाभाविक है. शिक्षा, सुरक्षा और स्वास्थ्य के संरक्षण का प्रथम उत्तरदायित्व शासन-प्रशासन का है. परन्तु यदि शासन-प्रशासन में अपराधीकरण का विकास हो रहा है और शासन-प्रशासन द्वारा अपराधियों को सुरक्षा मिल रही हो, उनका बचाव किया जा रहा हो और उन्हें प्रोत्साहन दिया जा रहा हो, तो समाज व देश की क्या व कैसी दशा बनेगी? यह बताने की आवश्यकता नहीं है. अतः अपनी सुरक्षा अपने आप करने की भी फिक्र करनी पड़ेगी.

कठिनाई यह है कि अच्छी बातें लोगों के मस्तिष्क में आसानी एवं सहजता से घर नहीं कर पाती, इसलिए अपेक्षित सुधार नहीं हो पाता. फिर भी

शेष पृष्ठ 14 पर ....

14 नवम्बर बाल दिवस पर

महान मानवतावादी और दार्शनिक-नेहरूजी

✍मन मोहन सिंह,
मोहाली, चण्डीगढ़

जवाहर लाल नेहरू को उचित रूप से ही स्वतन्त्र भारत का ‘निर्माता’ माना जाता है. उन्हें भारत की शान्ति-समर्थक विदेश नीति का, जिसे विश्व के सभी सद्भावनाशील लोगों से मान्यता तथा प्रशंसा प्राप्त हुई है, का जनक भी कहा जाता है. किन्तु हम समझते हैं कि नेहरू जी ने विश्व-दृष्टिकोण को समझने का प्रयत्न किये बिना नेहरू के बहुमुखी व्यक्तित्व को पूर्ण झलक नहीं पायी जा सकती. नेहरू जी का विश्व-दृष्टिकोण हमारे सामने उन्हें एक ऐसे मौलिक मानवदावादी विचारक के रूप में पेश करता है, जिसने भारत के सामाजिक-दार्शनिक चिन्तन के इतिहास में एक उज्ज्वल पृष्ठ जोड़ा है.

नेहरू जी में राजनीतिक नेता तथा राज-मर्मज्ञ की सक्रियता व ऊर्जा का गहन तथा प्रखर दृष्टिवाले विचारक के यथार्थपरक रवैये के साथ अदभुत सामंजस्य हुआ था. उनकी रुचियों का दायरा राजनीतिक, सामाजिक सम्बन्धों से साहित्य, कला, नैतिकता, सौन्दर्यशास्त्र, धर्म और दर्शन तक फैला हुआ है.

नेहरू जी के दार्शनिक विचारों पर विभिन्न सामाजिक और वैचारिक कारकों का प्रभाव पड़ा जिनमें भारत के स्वाधीनता-संग्राम में उनकी प्रत्यक्ष सहभागिता, भारतीय दर्शन की परम्पराओं तथा पश्चिम के सामाजिक चिन्तन को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है.

जवाहरलाल नेहरू के दार्शनिक विचारों पर विभिन्न सामाजिक और वैचारिक कारकों का प्रभाव पड़ा जिनमें भारत के स्वाधीनता-संग्राम में उनकी प्रत्यक्ष सहभागिता, भारतीय दर्शन की परम्पराओं तथा पश्चिम के सामाजिक चिन्तन को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है.

जवाहर लाल नेहरू को दर्शनशास्त्र का बड़ा अच्छा ज्ञान था. उनके विश्व दृष्टिकोण की मुख्य विशेषताओं का उदिकास 1930 से 1944 के बीच की अवधि में हुआ. इनमें से सबसे महत्वपूर्ण विशेषता थी बौद्धिकता तथा तर्कबुद्धिवान की ओर रूझान. इसका एक प्रमाण था विज्ञान में नेहरू का महान विश्वास. वे उसे मानवजाति और समस्त समकालीन सभ्यता के विकास का सबसे प्रबल कारक मानते थे. इसीलिए वह राजनीति समेत मनुष्य के कार्य कलाप के हर क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रणाली से ही निदेर्शित होने की सलाह देते थे.

नेहरू जी का कहना था कि दार्शनिक चिन्तन को पूर्णतः कार्य के लक्ष्यों व आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिये. वे जोर देते थे कि उनकी अमूर्त, पांडित्यवादी, जीवन से कटी हुई, सजीव यथार्थ से असम्बद्ध दार्शनिक अटकलों में कोई रूचि नही हैं.

यही कारण है कि वे धर्म के प्रति अपने रवैये को स्पष्ट करना आवश्यक समझते थे. धर्म की कटु और सर्वतोमुखी आलोचना करके नेहरू ने बड़े साहस का परिचय दिया. वे ठीक ही कहते थे कि धर्म एक ऐसी शक्ति है, जो मनुष्य को यथार्थ जीवन की घटनाओं के तर्कबुद्धिपरक अध्ययन से विमुख करके रहस्यवाद और कर्मकांड के कुहरे में लिपटे निराधार मतसिद्धातों के क्षेत्र में ले जाते हैं. ‘मेरी कहानी’ में वे लिखते हैं: ‘भारत और अन्य देशों में जिसे धर्म कहा जाता है, उसका दृश्य...मुझे संत्रस्त कर देता था और मैं प्रायः उसकी भर्त्सना करता था तथा उससे कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहता था. वह लगभग हमेशा ही अंधविश्वास और दकियानूसी, जड़मत और मूर्तिपूजा, शोषण और विशेषाधिकार प्राप्त समूहों की बरकरारी का साकार रूप होता है, धार्मिक विश्व-दृष्टि कोण राष्ट्र के नैतिक तथा आत्मिक उत्थान में सहायक नहीं, अपितु बाधक होता है...अधिकृत धर्म... अनिवार्यतः एक प्रतिक्रियावादी शक्ति बन जाता है, जो परिवर्तनों और प्रगति का विरोध करती हैं.’

नेहरू जी ने हमेशा मनुष्य की

~~समस्या को अपने दार्शनिक विचारों का~~ केन्द्र-बिन्दु बनाया. मनुष्य की समस्या में भी वे उसके कुछ विशेष पहलुओं को सर्वाधिक महत्व देते थे, जैसेकि व्यक्ति और समाज, उनका परस्पर सम्बन्ध तथा अन्योन्य-क्रिया, मनुष्य का सर्वागीण विकास, व्यक्ति के अन्तर्गत और परिवेश का सहसम्बन्ध, व्यक्ति और समूह के सम्बन्ध, मनुष्य का नैतिक उत्थान, सामाजिक प्रगति में मनुष्य का स्थान व भूमिका और 'मनुष्य की अनवरत खोजें.'

नेहरू जी मानव-व्यक्तित्व का बहुत आदर करते थे और इसीलिए नैतिक विकृतियां देखकर, जो मनुष्य में पिछड़ी सामाजिक परिस्थितियों के कारण पैदा होती है. उन्हें बड़ा कष्ट तथा दुःख होता था. उनके अनुसार मनुष्य की समस्या के दो पहलू हैं. उन्होंने लिखाः 'संस्कृति और हर जाति में मनुष्य के ब्रह्म जीवन तथा अन्तरजगत में दो प्रवृत्तियां काम करती हैं. जहां वे आपस में मिलती है या एक दूसरे के समीप रहती है, वहां सन्तुलन और स्थायित्व देखा जाता है. जहां उनमें दूरी बढ़ती है, वहां ठहराव और संकट मस्तिष्क और आत्मा का अवपीड़न पैदा होते हैं.'

नेहरू जी मनुष्य में उसके नैतिक आत्मिक पक्ष को मुख्य मानते थे. किन्तु उनका कहना था कि यह पक्ष आज वैज्ञानिक भौतिक और तकनीकी प्रगति से टकरा रहा है. उनके बीच की खाई को उन्होंने हमारे युग की त्रासदीपूर्ण विडंबना' कहा जिससे हमारे युग के आन्तरिक द्वन्द तथा दुविधाएं पैदा होती है.' और 'स्वयं सभ्यता का कुछ हद तक आत्मिक हास' हो जाता ~~है. 'आत्मिक सन्तुलन के बिना भौतिक~~ प्रगति महाविनाशक सिद्ध हो सकती है. दार्शनिक नेहरू जी इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे.

किन्तु महाविनाश के खतरे से बचने के लिए आपेक्षित 'आत्मिक संतुलन' भी कैसे हासिल किया जाये. इस समस्या के हल के लिए नेहरु जी ने 'वैज्ञानिक मानवतावाद' की संकल्पना प्रतिपादित की. उसके बुनियादी तत्व उन्होंने चौथे दशक के आरम्भ में

> नेहरू जी मानव-व्यक्तित्व का बहुत आदर करते थे. वे मनुष्य में उसके नैतिक आत्मिक पक्ष को मुख्य मानते थे. आपेक्षित 'आत्मिक संतुलन' को हासिल करने के लिए नेहरु जी ने 'वैज्ञानिक मानवतावाद' की संकल्पना प्रतिपादित की. उसके बुनियादी तत्व उन्होंने अपनी पुस्तक 'विश्व इतिहास की झलकें' में ही निरुपित कर दिए थे.

अपनी तत्व उन्होंने चौथे दशक के आरम्भ में अपनी पुस्तक 'विश्व इतिहास की झलकें' में ही निरूपित कर दिए थे, जहां उन्होंने लिखा कि मानवता का उद्देश्य अमूर्त मनुष्य नहीं, बल्कि वे करोड़ों उत्पीड़ित, दरिद्र, भूखे लोग होने चाहिये जिन्हें विचारक लोग 'एकढेर' में शामिल करते हैं और जिनका नाम है भारत के 'सामान्य जन'. किन्तु वे यह भी जानते थे कि मानवतावाद को एक ही देश के भीतर सीमित रखने से वे सामाजिक ऐतिहासिक कार्य-भार पूरे नहीं हो सकते जो वास्तविक मानवतावाद हमारे सामने पेश करता है. उन्होंने बताया कि इस वास्तविक मानवतावाद में यदि एक ओर व्यक्ति का सम्मान, उसका उदातीकरण और उसकी हि-चिन्ता निहित है, तो दूसरी ओर ~~'वैज्ञानिक भावना' है. 'मानवतावाद और~~ वैज्ञानिक भावना अधिकाधिक एकाकार होते जा रहे हैं और एक तरह के वैज्ञानिक मानवतावाद को जन्म दे रहे हैं'

नेहरू जी ने वैज्ञानिक समाजवाद के उसूलों को जीवन में चरितार्थ करने के तरीके व उपाय ढूंढने के प्रयत्न किये. यह स्पष्टतः दिखाता है कि मानवतावाद के एक सबसे महत्वपूर्ण तत्व अर्थात समानता की उनकी क्या अवधारणा थी. उन्होंने लिखा 'समानता पर आधारित वास्तविक सभ्यता और संस्कृति का तभी अस्तित्व हो सकता है, जब किसी देश अथवा वर्ग द्वारा अन्यों का शोषण नहीं किया जायेगा. ऐसा समाज सृजनशील, प्रगतिशील और अपने सदस्यों के परस्पर सहयोग पर आधारित होगा.. .अन्त में इसे सारे विश्व को अपने दायरे में ले लेना होगा. ...इस तरह की समानता साम्राज्यवाद और पूंजीवाद से, जो राष्ट्रों और वर्गो के शोषण पर आधारित है, वे क्रान्ति का विरोध कर रहे हैं और ज्यों-ज्यों संघर्ष बढ़ता जा रहा है, राजनीतिक समानता और संसदीय जनवाद को भी ठुकराते जा रहे हैं.'

'वैज्ञानिक मानवतावाद' विषयक इन विचारों की तार्किक परिणति इसमें देखने में आयी कि नेहरू जी ने उनमें समाजवाद का भी समावेश करने का प्रयत्न किया, जिसे वे एक तरह का 'जीवन-दर्शन' कहते थे. ज्ञात है कि नेहरू जी की पहल पर ही इंडियन कांग्रेस ने भारत में 'समाजवादी ढंग के समाज' के निर्माण को अपना लक्ष्य घोषित किया था. 1936 में कांग्रेस के **शेष पृष्ठ 16.....पर**

दर्द का हद से गुज़रना है दवा हो जाना

दूसरों की भलाई करने वाला उसी प्रकार से सुखी होता है जैसे दूसरों के हाथों पर मेंहदी लगाने वाले की उँगलियाँ खुद भी मेंहदी के रंग में रंग जाती हैं।

✍सीताराम गुप्ता
ए.डी.-106-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-34

उर्दू के मशहूर शायर मिर्ज़ा असदुल्ला ख़ां 'ग़ालिब' की बेशतर ज़िंदगी बेहद तकलीफ़ में गुज़री. ज़िंदगी भर कर्ज़ के बोझ तले दबे रहे. उनके कई संतानें पैदा तो हुईं पर एक भी जीवित न रह सकी. आख़िरकार अपनी बेगम के भांजे को गोद लिया पर वो भी ठेठ जवानी में चल बसा. इन्हीं बेहद ग़मनाक हालात में 'ग़ालिब' ने लिखाः

क़ैदे-हयातो-बंदे-ग़म असल में दोनों एक हैं,
मौत से पहले आदमी ग़म से निजात पाए क्यों?

जीवन की यही वास्तविकता है. दुख-दर्द अथवा पीड़ा जीवन का अनिवार्य तत्त्व है। दुख-दर्द अथवा पीड़ा के रूप अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन इससे निजात पाना असंभव है। दर्द से ही सृष्टि का विकास संभव है। प्रसव-पीड़ा से ही मातृत्व का असीम सुख संभव है। प्रसव-पीड़ा के अभाव में संतान के सुख का आनंद ही नहीं अपितु सृष्टि का विकास भी असंभव है। व्यष्टि और समष्टि दोनों के विकास और विस्तार के लिए अनिवार्य तत्त्व है दर्द।

जीवन की ही नहीं हर दिन की शुरूआत भी एक दर्द से ही होती है। उस दर्द के वशीभूत हम सुबह उठते ही सीधे टॉयलेट जाते हैं और ठीक से फारिग होने के बाद सारा दिन प्रसन्नचित्त रहते हैं। जो लोग सुबह के इस दर्द, इस प्रेशर से वंचित रह जाते हैं उनका सारा दिन सुस्ती और अकर्मण्यता में बीतता है। इसके अतिरिक्त जीवन में न जाने कितनी तरह के कष्ट हमें उठाने पड़ते हैं। शारीरिक व्याधियां अथवा दुर्घटनाएं हमें जर्जर बना देती हैं लेकिन जैसे ही हम बीमारी अथवा चोट की कसक से उबरने लगते हैं तो सुख की अनुभूति ही होती है।

कई बार ऐसा होता है कि चोट लगते-लगते बच जाते हैं लेकिन उसके संभावित परिणाम की चिंता व आशंका से व्याकुल अथवा त्रस्त हो उठते हैं जो कई बार लंबे समय तक व्याप्त रहती है। ऐसी घटनाओं से कोई प्रेरणा अथवा कोई सुख नहीं मिलता जबकि सचमुच की दुर्घटनाओं से हम बहुत कुछ सीख पाते हैं और उनकी कसक कम या समाप्त होने पर सुख की अनुभूति भी अनिवार्य रूप से होती ही है। रुग्णता के उपरांत रोगमुक्ति अथवा अच्छा स्वास्थ्य हमारे आनंद का कारण बनता है।

यह तो हुआ देह की पीड़ा से उत्पन्न आनंद। दुख-दर्द और कष्ट शारीरिक ही नहीं मानसिक भी कम नहीं होते अपितु ज़्यादा ही होते हैं। किसी ने अपमान कर दिया तो तिलमिला कर रह जाते हैं। मुख मलिन ओर कंठ शुष्क हो जाता हैं तथा शरीर में हानिकारक रसायनों अथवा हार्मोंस का उत्सर्जन प्रारंभ हो जाता है लेकिन जैसे ही इस अवस्था से उबरने लगते हैं अथवा किसी मानसिक आघात का प्रकोप कम होने लगता है हमारी शरीरिक अवस्था भी बदलने लगती है। तनाव कम होने लगता है। घटता तनाव और दबाव ही प्रसन्नता का कारण बनता है। तनाव और दबाव न होने से उतनी प्रसन्नता नहीं होती जितनी तनाव और दबाव से मुक्त होने में होती है।

दर्द से बचाव में नहीं दर्द को पार कर जाने में है वास्तविक प्रसन्नता और विकास। जैसे-जैसे हम दुखों के पहाड़ को पार करते जाते हैं हममें अतिरिक्त आत्मविश्वास उत्पन्न होने लगता है और यही अतिरिक्त आत्मविश्वास हमारे त्वरित विकास के लिए अनिवार्य है। जिसमें उबड़-खाबड़ रास्ते और ऊंची-नीची सड़कें पार करने का साहस और क्षमता नहीं वह विशाल पर्वतों की गगनचुंबी चोटियों को कैसे पार कर सकेगा? कंपकंपाती सर्दी जिसने सहन कर ली वही वसंत का आनंद लेगा। ग्रीष्म की चिलचिलाती धूप और ऊष्मा ही आनंददायक वर्षा के आगमन का कारण बनती है और उससे राहत भी प्रदान करती है।

आप ध्यानपूर्वक अपने जीवन में घटित दुखों का अवलोकन कीजिए। हमें जीवन में जाने कितने दुख और कष्ट

झेलने पड़ते हैं, अवमानना सहनी पड़ती है, उनकी तीव्रता से जूझना पड़ता है, उन्हें दूर करना होता है। यदि हम अपने जीवन में आने वाले कष्टों का विश्लेषण करें तो पाते हैं कि कुछ कष्ट या कोई कष्ट विशेष जीवन में सबसे ज़्यादा पीड़ित करता रहा लेकिन साथ ही ये भी पाते हैं कि इस एक बड़े कष्ट के कारण हम असंख्य छोटे-छोटे कष्टों को भूल गए।

हर कष्ट अपने से छोटे कष्टों को गौण कर देता है। हर परेशानी दूसरी परेशानियों को समाप्त कर देती है। जिसे हम बड़ी परेशानी मानते हैं यदि वह न होती तो इससे छोटी परेशानी भी तब कम कष्टदायक न होती लेकिन बड़ी परेशानियों के कारण हम छोटी परेशानियों से उबर जाते हैं जो हमारे आनंद के लिए ही नहीं उन्नति के लिए भी अनिवार्य है.

कष्टों से जूझने की क्षमता का विकास कर देता है दुख. जितना बड़ा दुख उतना ही क्षमतावान मनुष्य. हम कष्टों और समस्याओं से पलायन कर स्वयं अपने सुखों से दूर होते चले जाते हैं। असीमित उपभोग द्वारा भी हम अपने सुखों को कम कर देते हैं। शरीर को जितना अधिक आराम और सुविधाएँ देते हैं वह उतना ही निष्क्रिय और जड़ होता जाता है। परिश्रम अथवा व्यायाम करेंगे तो थोड़ा कष्ट तो ज़रूर होगा पर स्वस्थ शरीर का सुख भी मिलेगा। कम खाएँगे तथा भूख लगने पर ही खाएँगे तो भोजन के स्वाद का सुख भी मिलेगा.

फिर भी हम सब अभावों और दुख की शिकायत करते हैं पर क्यों? जिसने दुख नहीं देखा, सुख ही सुख देखा है, तनिक से दुख के आघात से टूट जाएगा लेकिन जो बार-बार टूट कर जुड़ना सीख जाता है उसे कोई दुख स्थाई रूप से नहीं तोड़े रख सकता. बरतनों को साफ करने और चमकाने के लिए उन्हें रगड़ना और मांजना पड़ता है। बकौल 'अज्ञेय' दुख ही हम सबको मांजता है। दर्द परिमार्जक है। दर्द उद्धारक है। दर्द ही हमारा मार्ग प्रशस्त करता है। दर्द ही हमें जीवन में दीक्षित करता है। दर्द सर्वोत्तम शिक्षक है।

दर्द ने इंसान को इंसान बनाया। दर्द न होता तो संवेदना न होती और संवेदना न होती तो इंसानीयत न होती। स्वयं की ही नहीं अपने परिजनों व दूसरों की पीड़ा भी हमारे लिए उत्प्रेरक का काम करती है। इसी पीड़ा ने असदुल्ला ख़ां को 'ग़ालिब' बनाया। इसी पीड़ा ने मोहनदास को 'गांधी' बनाया। इसी पीड़ा ने बाबा आमटे को अभय साधक बनाया। इसी पीड़ा ने दशरथ माझी को पहाड़ काट कर अपने गांव को शहर के निकट लाने के लिए विवश कर दिया। दर्द उपयोगी है। दर्द सर्जक है। दर्द से छुटकारा असंभव है। दर्द से पलायन बेमानी है। दर्द को बढ़ने दीजिए, उसे हद से गुज़रने दीजिए। 'ग़ालिब' ने ठीक ही कहा है :

इश्रते-कतरा है दरिया में फ़ना हो जाना,
दर्द का हद से गुज़रना है दवा हो जाना।

शेष पृष्ठ 10 का.......

वैचारिकी

अच्छी बातों को छोड़ा नहीं जा सकता. उन्हें दोहराने रहना आवश्यक है. अतः पुनः दोहराया जा रहा है कि हर व्यक्ति का यह धर्म है कि वह यथासंभव एवं यथाशक्ति सच्चाई, अच्छाई, भलाई एवं ईमानदारी के मार्ग पर चलने की कोशिश करें. इसी से समग्र चेतना का उदविकास होगा और सर्वजन हिताय की भावना को बल मिलेगा. हां! कमाने और खाने का लक्ष्य लेकर चलने से जीवन किसी न किसी प्रकार चल तो जायेगा, पर सार्थक कदापि नहीं होगा. जीवन तो सार्थक होगा, जब परहित पर सेवा, परोपकार और त्याग की भावना को समाहित करके जीवन चर्या चलाई जायेगी और ईमानदारी से जीवन यापन किया जाएगा.

क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर से निर्मित हुआ है यह शरीर, इसमें मन, बुद्धि, अहंकार रखा गया है और जीव भाव भ्रा गया है. इन नव तत्वों के संयोग से बने इस शरीर से जीवन चल सकता है, जैसा चाहे करें. परन्तु दसवें तत्व के ज्ञान के बिना न जीवन सार्थक होगा न भव सागर से उद्धार होगा. दसवें तत्व का योग बिना जिज्ञासा, साधना एवं अभास के नहीं हो सकता. दसवा तत्व है सब कुछ का स्वामी, सब कुछ की उत्पत्ति का ध्यान और सब कुछ का लय-स्थान-ईश्वर. उसकी आवश्यकता भी जीवन में है या नहीं, इसका बोध भी करना चाहते हैं या नहीं? यह हर व्यक्ति को सोचना चाहिए. निर्णय लेने का अधिकार है हर व्यक्ति को. कोई जोर जबरदस्ती नहीं है. अपने चिन्तन को परिमार्जित और परिष्कृत करने तथा आचरण को सुधारने का अधिकार एवं अवसर सभी को है. अपने सुकृत्य एवं कुकृत्य का अलग-अलग परिणाम अवश्य मिलेगा और उसे सहन भी स्वयं को करना पड़ेगा.

मानव शरीर का मंत्रीमण्डल

1—	प्रधानमंत्री	हृदय
2—	वित्त मंत्री	कलेजा
3—	रक्षा मंत्री	चर्म (चमड़ी)
४-	सूचना मंत्री	कान
५-	शिक्षा मंत्री	मस्तिष्क
६-	खाद्यमंत्री	पेट
७-	औद्योगिक मंत्री	आंते
८-	सिंचाई मंत्री	किडनी
९-	संसाधन मंत्री	खून
१०-	प्रसार मंत्री	आंखे
११-	गृह मंत्री	फेफड़े
१२-	स्वास्थ्य मंत्री	आंख,कान, नाक
१३-	कृषि मंत्री	बाल
१४-	रसायन मंत्री	पैन्क्रीयाज
१५-	जल मंत्री	गाल ब्लेडर
१६-	वितरण मंत्री	गला
१७-	श्रम मंत्री	हाथ
१८-	उड्डयन मंत्री	मन
१९-	रेल मंत्री	पैर
२०-	प्रचार मंत्री	जबान

संकलनकर्ताः राकेश दाधीच,
कक्षा-११, दाधीच भवन, बी-२३, कृष्णापुरी, पुराना रामगढ़ रोड, आमेर रोड, जयपुर, राजस्थान

किसकी आंखों में क्या हैं

१-	पिता की आंखो में	फर्ज़
२-	मां की आंखों में	ममता
३-	भाई की आंखों में	प्यार
४-	अमीर की आंखो में	घमण्ड
५-	गरीब की आंखों में	आशा
६-	मित्र की आंखों में	सहयोग
७-	बहन की आंखों में	स्नेह
८-	सज्जन की आंखों में	दया
९-	शिष्य की आंखों में	आदर
१०-	दुश्मन की आंखों में	बदला
११-	गुरू की आंखों में	आशिष

क) मोक्ष का अर्थ है मोह को समाप्त करना. ‘मो’ अर्थात मोह ‘क्ष’ अर्थात क्षय. मोह का क्षय ही मोक्ष है.

ख) उठो, जागो, हमारे जिन श्रेष्ठ ऋषियों ने छूरे जैसी धार पर चलकर कठिन मार्ग को पार किया, तुम भी उन श्रेष्ठजनों के ज्ञानमार्ग पर चलकर लक्ष्य को प्राप्त करो.

ग) जो राजा अपनी प्रजा का विश्वास प्राप्त कर सकता है, प्रमाणित होने पर अपराधियों को दण्ड देता है, क्षमा करने योग्य को क्षमा करता है, उसी को राज्यश्री प्राप्त होती हैं.

संकलनकर्ताः **शोभित दाधीच,** दाधीच भवन, बी-२३, पुराना रामगढ़ रोड, आमेर रोड, जयपुर-२, राजस्थान

अनमोल रत्न-गृहस्थी के

१-**उठिये** -जल्दी घर के सारे, घर मं होंगे पौबारे
२-**नहाईये** -पहिले सिर, फिर हाथ- बाद में पांव
३-**खाईये** -दाल रोटी-चटनी-रहिये खुश
४-**पीजिये** -दुध खड़े होकर-पानी-दवा बैठकर
५-**पीजिये** -दुध खड़े होकर-पानी-दवा बैठकर
६-**करिये** -आये का मान, जाते काा सम्मान
७-**सीखिये** -बड़ों की सीख, बुजुर्गो की रीत
८-**देखिये** -माता की ममता, पत्नि का धर्म
९-**बोलिये** -कम, मीठे बोल
१०-**दीजिये** -दान जानकर, जो लेवें खुशी मानकर
११-**फेंकिये** -ईर्ष्या-क्रोध

जीतने के लिए चीज है

१-	देने के लिए चीज है	-	दान
२-	खाने के लिए		गम
३-	दिखाने के लिए		दया

४- लेने के लिए ज्ञान
५- जीतने के लिए प्रेम
६- कहने के लिए सत्य
७- रखने के लिए इज्जत
८- मोक्ष के लिए प्रभु स्मरण
९- जीतने के लिए क्रोध
१०- प्रभु से मांगने के लिए भक्ति
११- स्वास्थ्य के लिये योग-प्रणायाम

संकलनकर्ताः सुष्मिता दाधीच
दाधीच भवन, बी-२३, कृष्णापुरी, पुराना रामगढ़ रोड, आमेर रोड, जयपुर-२, राजस्थान

शेष पृष्ठ १२ का......

महान मानवतावादी और दार्शनिक- नेहरूजी

लखनऊ अधिवेशन के मंच से उन्होंने निर्भीकतापूर्वक घोषणा की थी कि भारत और विश्व के सामने उपस्थित समस्याओं के हल की एकमात्र कुंजी समाजवाद है. इसके साथ ही उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया था कि समाजवाद एक अस्पष्ट मानवतावादी अवधारणा नहीं, बल्कि ठोस, सुस्पष्ट वैज्ञानिक-आर्थिक अवधारणा है.

नेहरू जी की रचनाओं में समाजवाद के बारे में तरह-तरह के विचार मिलते है और कई बातों में वे वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धात से काफी भिन्न भी है. किन्तु उसके एक पहलू यानी मानवतावादी सारतत्व पर जोर देना तो नेहरू जी कभी नहीं भूलते थे. एक विचारक के तौर पर नेहरू जी को विरासत में भी सर्वोत्तम तत्व है, उन सबके मूल में मानवतावाद और समाजवाद का एकीकरण और संश्लेषण करने की नेहरू की आकांक्षा निहित थी. यही एक राजनेता के रूप में नेहरू जी की अपार प्रतिष्ठा तथा महत्ता का आधार भी बनी. नेहरू जी के महान आदर्श आज भी उनके करोड़ो देशवासियों और विश्व के सभी सद्भावनाशील लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बने हुए है.

जिस दिन आपको यह पता चलेगा कि नेकी करने से मन को शांति मिलती है तो आप बुरे काम करना छोड़ देंगें.
दाउजी

विश्व स्नेह समाज मासिक आगामी अंक

रायबरेली के साहित्यकार विशेषांक

दिसम्बर २०१३

इस विशेषांक में आप पढ़ेगे, रायबरेली की लुप्त होती कला संस्कृति पर, रायबरेली का ऐतिहासिक महत्व सहित रायबरेली के सुप्रसिद्ध लेखकों की अन्य लेख, कहानियां, कविताएं, दोहे व ग़ज़ले।
इस विशेषांक के **अतिथि सम्पादक**-प्रमोद प्रखर होगें तथा **सह अतिथि सम्पादक**-श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली' रायबरेली होंगी. अपनी प्रतियां आज ही सुरक्षित करा लेवें।

विश्व स्नेह समाज हिन्दी मासिक के 10 वार्षिक सदस्य बनायें और 250/-रुपये की पुस्तकें उपहार में पायें.

10 सदस्यों के नाम व पते सहित रुपये 1100/मात्र की राशि धनादेश/ड्राफ्ट द्वारा भेजने का कष्ट करें।

संपादक-विश्व स्नेह समाज मासिक,
एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, उ.प्र.

विश्व स्नेह समाज हिन्दी मासिक के आगामी परिचर्चा का विषय

1—मंहगाई मूल कारण एवं निवारण
2-भारतीय पुलिस की संवेदनहीनताः कारण एवं निवारण

परिचर्चा हेतु अपने विचार अधिकतम 250 शब्दों में, एक फोटो के साथ क्रम संख्या 01 व 02 के लिए क्रमशः 15 दिसम्बर, 15 जनवरी 2013 तक मेल करें या भेजें। मेल हिन्दी क्रुति देव फान्ट में ही भेजें. अच्छे विचारों को उपहार प्रदान किया जाएगा.

आवश्यक सूचना

विश्व स्नेह समाज मासिक पत्रिका की वार्षिक सदस्यता ग्रहण करने वाले सदस्यों को विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित श्री बालाराम परमार 'हंसमुख' पुणे महाराष्ट्र की कृति 'नेता व्याजस्तुति और जागो भाग्य विधाता की प्रति निःशुल्क प्रदान की जाएगी. इस योजना का लाभ उठाने की शीघ्र अपना सदस्यता फार्म भर कर भेजें. यह योजना प्रतियों के उपलब्ध रहने तक लागू रहेगी.

विश्व स्नेह समाज का अब सदस्यता शुल्क देना बिलकुल आसान

1. अपने आसपास ही विजया बैंक की किसी शाखा में जाए, खातासंख्या 718200300000104 में अपनी सदस्यता राशि जमा करें,
2. एक पोस्टकार्ड पर जमा की तारीख लिखकर भेज दें यां vsnehsamaj@rediffmail.com पर ईमेल करें.

राजभाषा, राष्ट्रभाषा, जन–जन की भाषा हिन्दी अपनाएं भ्रष्टाचार भगाएं।

दाऊजी

पत्रिका के प्रकाशन के तेरह वर्ष पूरे होने पर विशेष प्रस्ताव

सदस्यता ग्रहण करें और सदस्यता शुल्क के बराबर मूल्य की पुस्तकें मुफ्त प्राप्त करें

सदस्यता प्रपत्र

महोदय,

मैं विश्व स्नेह समाज का, एक साल, 5 साल, आजीवन एवं संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये ....नकद/धनादेश/चेक/बैंक ड्राफ्ट/पे इन स्लिप द्वारा भेज रहा/रही हूं. कृपया मुझे 'विश्व स्नेह समाज' के अंक नियमित रूप से भिजवाते रहें.

1. बैंक ड्राफ्ट क्रमांक..................................दिनांक...........
बैंक का नाम...
2. धनादेश क्रमांक....................................दिनांक...........

हस्ताक्षर

नाम :..
पता :..
....
.....पिन कोड...........
दूरभाष/मो0..........................ईमेलः..............................

विशेष नियमः

01 नवीकरण हेतु शुल्क भेजते समय कृपया सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें, जो पत्रिका भेजते समय आवरण लिफाफे पर आपके नाम के ऊपर लिखा होता है.
02 कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें. उत्तर प्रदेश के बाहर के चेक भेजते समय बैंक शुल्क जोड़कर भेजें.
03 सदस्यता शुल्क यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः538702010009259 आईएफएससीस कोड (आरटीजीएस): UBIN0553875 में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.
04 आजीवन सदस्यों का सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाएगा व संस्थान के प्रकाशनों में 25प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है.
05 संरक्षक सदस्यों का नाम प्रत्येक अंक में मोबाइल नं0 सहित प्रकाशित किया जाता है तथा सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाएगा.

सदस्यता प्रकार	शुल्क(भारत में)	शुल्क (विदेशों में)
एक प्रति :	रु0 10/–	$ 1.00/
वार्षिक	रु0 110/–	$ 5.00/
पाँच वर्ष :	रु0 500/–	$ 150/
आजीवन सदस्यः	रु0 1100/–	$ 350/
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000/–	$ 1500/

विश्व स्नेह समाज(एक रचनात्मक क्रान्ति)

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011, उ.प्र. ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

तेरी जय हो भ्रष्टाचार!!

पल में कमाल करे,
पल में निहाल करे,
आरोप नहीं निराधार,
तेरी जय हो भ्रष्टाचार।।1।
सूरज उगते तेरा कलरव,
सूरज चढ़ते तेरा तांडव,
सूरज ढलते तेरी जयकार,
तेरी जय हो भ्रष्टाचार।।2।।
व्यक्तिगत जीवन में तू दूध,
सार्वजनिक जीवन में तू भूत,
तेरी माया बन गई अपरम्पार
तेरी जय हो भ्रष्टाचार।।3।
नेता का बंगला है तू,
नेता का अमला है तू ,
तू ही चलाता है सरकार,
तेरी जय हो भ्रष्टाचार।।4
तुझमे ताकत सीमेंट खाने की,
तुझमे ताकत कोयला पचाने की,
तेरे बल चमचे भी भरे हुंकार,
तेरी जय हो भ्रष्टाचार।।5।
तू तलवार तो क्या, तोप है,
तू रोब तो क्या, रुतबा है,
कार्यालय में तेरा ही सत्कार,
तेरी जय हो भ्रष्टाचार।।6।
हर दल में तू ही तू,
हर जेल में तू ही तू,
तू नहीं तो सब लाचार,
तेरी जय हो भ्रष्टाचार।।7।।
तू सुंदरी का सातों श्रंगार,
तू ही साहित्यिक अलंकार,
तू जिसमे चाहे भर दे अहंकार,
तेरी जय हो भ्रष्टाचार।।8।।
सार्वजनिक जीवन के नभ में तू,
व्यक्तिगत जीवन के गर्भ में तू,
तेरे साये में पलते गद्दार,
तेरी जय हो भ्रष्टाचार।।9।
उन्नति दिलवाने का तुझमें दम,
अवनति करवाने का रखता दम,
तू जहां नहीं, वह जहाँ है बेकार,
तेरी जय हो भ्रष्टाचार।।10।।
कबीर वाणी फीकी तेरे सामने,
गीता ज्ञान फीका तेरे सामने,
जन गन मन सोच तेरी किरदार,
तेरी जय हो भ्रष्टाचार।।11
तू क्या से क्या बन गया,
प्रजातंत्र का बादशाह बन गया,
ममता माया सब करे जयकार,
तेरी जय हो भ्रष्टाचार।।12
जनता के सेवक तेरे भक्त,
तू साथ देता हर वक्त,
सड़क से संसद तक तेरी सरकार,
तेरी जय हो भ्रष्टाचार।।13।
तू गन्ने के खेत में,
तू पत्थर और रेत में,
कफ़न में भी तेरा विस्तार,
तेरी जय हो भ्रष्टाचार।।14
तुझे लगता है युगों रह पायेगा!
तुझे लगता है सत्य मर जायेगा!!
तू सबको समझने लगा है गंवार,
एक दिन तेरी दूर्गति हो भ्रष्टाचार।।15।
तुझे राम दुहाई,जा चला जा,
तुझे दुनिया रास न आई, चला जा,
और पसरा तो सत्य भरेगा हूँकार,
एक दिन दूर्गति होगी भ्रष्टाचार।।16।
प्रजातंत्र के निर्मल नभ को,
जन गण मन सब को,
याद आने लगे हैं भारतीय संस्कार
एक दिन तेरी दूर्गति होगी भ्रष्टाचार।।17

-बालाराम परमार, पुणे,
महाराष्ट्र

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

१. प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर
२. बिक्री की व्यवस्था
३. प्रचार—प्रसार की व्यवस्था
४. विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें

प्रसार सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011,
bs&esy% sahityaseva@rediffmail.com मो0:9335155949

जनसंदेश

यदि केन्द्रीय सरकार/सरकारी बैंक/केन्द्रीय सरकार के उपक्रम का कोई भी अधिकारी घूस माँगे तो फोन करें:-एस.पी. सीबीआई, लखनऊ -0522-2201459, 2622985 और एस.एम.एस 9415012635

दीवाली से दिवालापन दूर भगाओ

दीपमालिका दिनकर भांति दीप दीप से हुआ उजाला,
किरन प्रभाती बिखर पड़ी है दूर हुआ अंधियारा काला।
कालेपन को गोरा कर दो अमावसी को पूरनमासी,
शुद्ध सफेदी साफ सुथरे हों जन मन सारे भारतवासी।
तभी देश के हर मानव का कल्याणपूर्ण होगा जीवन,
स्वाभिमान से जीकर सर्वदा हरा भरा होगा उपवन।
खुशहाली का चांद चमन चहुंदिश चम चमकर चमकेगा,
सफलता के परिश्रमी फल चखकर प्रति प्राणी पनपेगा।
दीपावली दीपों की कड़ियां यह बनी दीप की माला,
धनदेवी संपदा सदा दीवाली मत बनाओ दिवाला।
नहीं तो तन मन अंजर पंजर का निकलेगा फिर कसाला,
दिलोदिमाग ढीले पीला होगा बुद्धि का भी दिवाला।
फिर अंतिम क्रिया का कर्मकाण्ड बैठे बैठे हाथ मलेगा,
जनम जनम के ऐसे दुष्कर्मो से मानस नहीं फलेगा।
दिवाला का संधि विच्छेद करें तो रूप दिवा+ला होगा,
दिन लाकर अंधकार मिटाकर धन लक्ष्मी मंदिर आला होगा।
तभी सच्चे माने में स्नेहपूर्वक संगठित दीपों की पंक्ति,
एकबद्धता से सारा जग जगमग होकर परस्पर पावें शक्ति।
दीवाली पर प्रेरित दिपों से मां लक्ष्मी की रक्खो लाज,
दिवालियापन पर किनार हो धनवान देश घर सभी समाज।
दिव्य संपत्ति वाली दीवाली से दिवालापन दूर भगाओ,
निःस्वार्थ भाव से रीति नीति प्रीतिपूर्वक 'मंगल' पर्व मनाओ।

-श्रीकृष्ण अग्रवाल 'मंगल', कोलकाता, पं०बंगाल

माँ लक्ष्मी से निवेदन

सब दामन फैलाते दर पर, मैं भी तो फैलाया हूं।
शीश झुकाते तेरे दर पर, मैं भी शीश झुकाया हूं।।
कहीं बनी तू दुर्गा माता, कहीं बनी माँ काली।
तेरा बन्दा तुझसे पूछ रहा, क्यों मेरा दामन खाली है।।
माता तेरे हाथों में, धन रेखा तू बना देना।
अंधियारे से ऊब चुका, एक नन्हा दीप जला देना।।
बड़े दिनों से द्वार खड़ा, मेरे भी भाग्य जगा देना।
डरता हूं, काली छाया से, तू उसको दूर भगा देना।।
किस्मत मुझसे रूठ गयी, हे माता उसे मना देना।
दीपावली में शीश झुकाऊँ, सर पर हाथ लगा देना।।
भक्तों के तू द्वारे जाती, मेरे घर भी आना माँ।
मीठे फल मैं तुझे खिलाऊँ, तू भी मुझे खिलाना माँ।।
बच्चों को मैं गोद उठा, चरणों में शीश झुकाऊँगा।
जब तेरा आशीष मिले, तब अपना शीश उठाऊँगा।।
पान, सुपाड़ी, ध्वजा, नारियल, माँ मेरा स्वीकार करो।
नित् प्रणाम चरणों में माँ, माँ मुझको अंगीकार करो।।

-रामकुमार वर्मा, सरगुजा, छत्तीसगढ

दीपावली

सबसे अच्छा सबसे सुन्दर,
दीपावली का है त्यौहार।
****

जब पावन दीवाली आती,
सबके मन में खुशिया छाती।
लीप-पोत घर करें झकाझक,
सुन्दर झालर डाले द्वार।
****

नये-नये वस्त्र पहनकर बच्चे,
खड़े द्वार पर लगते अच्छे।
'हैपी दीवाली' कहें परस्पर,
प्रेम का उमड़ रहा है ज्वार।

पूजा का सब रख सामान,
'श्री' जी को करते आव्हान।
गणेश वंदना, लक्ष्मी जी की,
करते हैं सब जय-जयकार।
****

लक्ष्मी मैया जल्दी आओ,
ताजी बनी मिठाई खाओ।
सारी दुनियां में खुशियों का,
दिखलाओ अपना चमत्कार।
****

चौदह वर्ष राम बन भटके,
किये कार्य संतो के अटके।

माता-पिता के प्रण को राखा,
किया अहिल्या का उद्धार।
****

रावण मार अयोध्या आए,
सबने खुशी में दीप जलाएं।
न्याय, सत्य की विजय हो गई,
झूठ, घमण्ड की हो गई हार।

-राम सहाय बरैया, ग्वालियर, मप्र.

प्रोमिला भारद्वाज की दो कविताएं

पिघलता शरीर

लगता है शरीर पिघलने है लगा
पिघल-पिघल के बिखरने है लगा,
बिखर-बिखर के, आसमान है बना,
विस्तृत अन्तहीन आसमान,
उस आसमान पर मेरी आत्मा
चॉद सी शीतल और उज्जवल,
बिखेर रही, दुधिया चांदनी जगमग
सितारे बने हैं, विचार मेरे।
खेलते आपस में, ऑख मिचोली
इतने में इच्छाएं आ जाती,
बादल बन, मंडराने लगती
सितारों को, सिखलाती।
आसमान को, बहका देती,
बहा ले जाती, धरती पर
आत्मा कहां रह पाती स्थिर,
अशन्ति की अग्नि जलती।
फिर शरीर, तपने लगता
फिर से, पिघलने है लगता।
पिघल-पिघल बिखरता
बिखर-बिखर बनता
विस्तृत अन्तहीन आसमान।

जादूई आवाज

माँ की खनकती आवाज
घुलती कानों में
बन मिश्री की मिठास,
झंकृत करे रोम-रोम
बज उठें, जैसे एक साथ
सैकड़ों सुरीले साज,
तन के सूने खण्डहर में
गूंजे बन रसभरा संगीत,
माँ की खनकती आवाज।
उतरती मन में
उन्हीं के सींचे तन में,
बन के उल्लास
दिलाए स्नेहिल आभास,
उनके होने का
यहीं कही, मेरे आस-पास,
आशीष बन मँडराए
सदा मेरे चहुँ ओर,
कोसों दूर हो यद्यपि
नसों में बहती रहती,
हौले-हौले बन प्यार
दुलारती सी पुचकारती,
अपनी ओर से
निश्चिंत करवाती आश्वासित,
रहती मेरे लिये चिंतित
शुभाशीष बरसाती,
शुभचाहती,
थकान सारी मिटाती
माँ की खनकती आवाज,
जब-जब छुए तन
भिंगों दे ममता से
जीवन की कटुताओं से
आहत हुआ शुष्क मन,
मानों मरूस्थल में
बरसने लगी हो रिमझिम,
ठण्डी ठण्डी बौछारें,
ऐसी तृप्ति दे जाए
नई-नई आशाएँ जगाए
जब जब आके सहलाए
अमृत रसपान कराए
कैसा जादू है इस में
कोयल के गीत से भी मधूर
भाव विभोर करती
आनन्दित करे, हो तरंगित
तन-मन व वातावरण में,
हर घड़ी, हर पहर
माँ की खनकती आवाज
घुलती कानों में
बन मिश्री की मिठास।

–प्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र,
मण्डी, हिमाचल प्रदेश

रिवाज़

रहते थे एक घर में, परिवार एक साथ, अकेले रहने का अब चल गया रिवाज़।
टूटने लगे हैं घर जब से गली गॉव में, बच्चों के मन से बुजुर्गो का मिट गया लिहाज।
दीवार खिंची ऑगन में, मन भी बॅट गए, जब से अलग चूल्हे का चल गया रिवाज़।
दीवारे क्या खिंची मॉ-बाप बॅट गए, बताने लगे हैं बच्चे अब खर्चे का हिसाब।
मुश्किल है आजकल बच्चों को डांटना, देने लगे हैं बच्चे हर बात का जवाब।
दिखते नहीं बूढ़ो के भी बाल अब सफेद, लगाने लगे हैं जब से वो बालों में खिजाब।
दौलत की हबस ने 'कीर्ति' कैसा खेल खेला,
बदल गया है आजकल हर शख्स का मिजाज।।

-**डॉ० ए.कीर्तिबर्धन**, मो० 8265821800

गुलेन्दी

-मोहन तिवारी 'आनन्द'
संपादक-कर्मनिष्ठा, भोपाल, म.प्र.

तुलसी आगन लीप रही थी. दोपहर होने में थोड़ी देर थी. श्याम को आते देख वह एक मिनट के लिए रूक गई. श्याम मुरली से कुछ कह रहे थे. तुलसी उनकी बात सुनना चाह रही थी, पर कुछ सुनाई नही दे पा रहा था. वह फिर लीपने लगी.

शाम हो गई थी. श्याम अभी तक घर नहीं लौटे थे. तुलसी बड़ी उदास थी. बार बार दरवाजे पर आकर राहगीरों से पूछती थी. परन्तु किसी ने भी नहीं बताया कि श्याम उसे दिखे हैं. माँ ने भोजन बना रखा था, प्रतीक्षा कर रही थी.

''तुलसी तुम खाना खा ला'' मैंने कहा.

''वे आ जांय, उनको खाना खिलाने के बाद ही खाऊँगी.'' तुलसी बोली.

मैं वे दिन नहीं भूल पाता, जब श्याम बीमार होकर अस्पताल में भरती थे. तुलसी के ऊपर घर, खेती, व पालतू जानवरो की पूरी जिम्मेदारी आ पड़ी थी. रामू की उम्र उस समय 13 वर्ष की थी. घर का कमाने वाला बीमार, बच्चे छोटे-छोटे, कोई मदद करने वाला नहीं. ऐसी गम्भीर परिस्थितियों में तुलसी ने परिवार का भरण पोषण कैसे किया होगा, सोचने से रोंगटे खड़े हो जाते हैं. हाँ उस समय, रामू ने बड़े साहस, और समझदारी से तुलसी का साथ दिया था. तुलसी को रामू बड़ा भरोसा था.

''रामू मैं कक्का के पास जा रही हूँ तुम घर का ध्यान रखना, बैल खेत से ले आना, भैंस बांध लेना, बरेदी से गाय भैंसों का दूध लगवा लेना, अगर बरेदी को कुछ दिक्कत जाये तो गाय भैंस के बच्चों को छोड़कर दूध पिलवा देना। मैंने रोटियाँ बना कर रख दी. सभी भाई बहिन मिलकर खा लेना. सभी को एक साथ अटारी में लिटा लेना. किवाड़ अच्छी तरह से बन्द कर लेना. किसी बात की चिन्ता मत करना. मैं कक्का की छुट्टी कराकर सबेरे तक आ जाऊँगी.'' अस्पताल जाते समय माँ ने कहा 'रामू सामान का थैला हाथ में लेकर गाँव से बहुत दूर तक तुलसी को छोड़ने गया है. तुलसी ने रामू से कहा, ''भइया तुम घर जाओ, मैं जाती हूँ तुम ध्यान रखना.'' रामू ने तुलसी से कहा, ''माँ तुम किसी प्रकार की चिन्ता मत करो, मैं जो हूँ.''

रामू ने उन दिनों घर को बड़ी समझदारी से सम्हाला था.

श्याम का इलाज कराने में तुलसी ने अपने सभी गहने बेच डाले थे.

दूध देने वाली दो भैंसे, जब खरीदने वाला ले जाने लगा तो, रामू बहुत रोया था. रामू के आँसू पोंछते हुए तुलसी ने कहा, ''भइया ये भैंसे कक्का से अधिक प्यारी नहीं हैं, कक्का ठीक होकर घर आ जायेंगे तो हम फिर से भैंसे खरीद लेगें.'' रामू भैंस के बच्चों से लिपट लिपट कर बहुत रोया था उस दिन।

डाक्टर ने श्याम को टी. वी. बतलाई थी. उन दिनों टी.वी. लाइलाज बीमारी मानी जाती थी. डॉक्टर ने तुलसी से कहा था, इन्हें टी.वी. हो गई है. एक फेफड़ा गल गया है. हालत बहुत बिगड़ चुकी है. तुमने अस्पताल लाने में देर कर दी है. डाक्टर की बात को बीच में ही काटते हुए तुलसी ने कहा, ''डाक्टर साहब अब जो हो चुका उसको छोड़िये, आप इनका इलाज करिये। इलाज करना आपका काम है ठीक करना भगवान का.''

तुलसी की बात सुनकर डाक्टर ने कहा, ''बहुत खर्चा आयेंगा।''

तुलसी ने कहा, ''इसकी चिन्ता आप क्यों कर रहे हैं? आप इलाज करिये, मैं इनकी तौल, रूपये खर्च करूँगी, मुझे धन सम्पत्ति की नही, इनकी जरूरत है, डाक्टर साहब मेरे बच्चों को अनाथ होने से बचालो, मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ।''

तुलसी की आँखों से आँसू बह निकले। डाक्टर साहब ने तुलसी को धीरज बँधाते हुए कहा, 'बहिन जी आप घबरायें नहीं, टी.वी. का इलाज थोड़ा मँहगा जरूर है किन्तु अगर ठीक से दवा ली जाय तो मरीज ठीक हो जाता है।''

तुलसी ने कहा, ''डाक्टर साहब

श्याम का इलाज कराने में तुलसी ने अपने सभी गहने बेच डाले थे. दूध देने वाली दो भैंसे, जब खरीदने वाला ले जाने लगा तो, रामू बहुत रोया था. श्याम को टी. वी. की बीमारी थी. उन दिनों यह लाइलाज बीमारी थी. डॉक्टर ने कहा था, इनका एक फेफड़ा गल गया है. हालत बहुत बिगड़ चुकी है.

मेरे परिवार को तो आपका ही सहारा है, हाँ मैं इतना कहे देती हूँ इनके इलाज में मै धन की कमी नहीं आने दूँगी. यदि खेत जमीन जायदाद बेचने के बाद मुझे बखरी भी बेचनी पड़ी तो मैं बच्चों के सिर का साया बचाने के लिये उसे भी बेच दूँगी.'' डाक्टर ने श्याम को भरती कर लिया। इलाज प्रारंभ किया, दवाई का असर कुछ इस तरह से हुआ कि श्याम की तवियत और बिगड़ने लगी. तुलसी ने डाक्टर से कहा, ''डाक्टर साहब आज रात में इनकी तबियत बहुत विगड़ रही थी, खाँसी बढ़ गई है, सीने में दर्द की शिकायत है, कुछ बुखार और घबराहट बता रहे हैं.

डाक्टर ने कहा, ''चिन्ता की कोई बात नही है, दबाई का असर हो रहा है, दवाई लेने से लक्षण उभरते हैं, दो तीन दिन में ही आराम लग जायेगा. मैं बुखार और दर्द की दवा लिख देता हूँ, दवा देने से आराम मिल जायेगा. अगर सीने का दर्द बढ़े तो नर्स को भेजकर मुझे बुलवा लेना.''

श्याम लगातार 6 माह तक अस्पताल में रहा. तुलसी ने इलाज में पानी की तरह धन बहाया. तुलसी की मेंहनत, लगन व निष्ठा ने असर दिखाया. श्याम ठीक हो गया. डाक्टर साहब ने तुलसी से कहा, ''बहिन जी, ये बिलकुल ठीक हैं, अब आप इन्हें घर ले जा सकती हैं, पन्द्रह दिन बाद दिखा जाना, मैं ने दवाइयाँ लिख दी हैं, छः माह तक लगातार देते रहना। तम्बाकू से परहेज करना नहीं तो रोग फिर हो सकता है.''

तुलसी ने डाक्टर से कहा, ''डाक्टर साहब आपने इनकी जान बचाकर मेरे बच्चों का जीवन बर्वाद होने से बचा लिया है, आप भगवान हैं। मैं जिन्दगी भर आपकी ऋणी रहूँगी. मैं आपको कुछ भी दे सकने लायक नहीं हूँ किन्तु भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि वे आपके परिवार को सदैव सुखी रखें। जैसी आपने हम पर दया करी है ऐसी हर गरीब मजबूर पर करना, भगवान सदैव तुम्हारा भला करेगा।'' कहते हुए तुलसी की आँखों से आँसू बह आये जो उनकी खुषी की गवाही दे रहे थे ।

> ''डाक्टर साहब मेरे परिवार को तो आपका ही का सहारा है, हां, इनके इलाज में धन की कमी नहीं आने दूँगी. श्याम लगातार ६ माह तक अस्पताल में रहा. तुलसी ने पानी की तरह धन बहाया। तुलसी की मेंहनत, लगन व निष्ठा ने असर दिखाया। श्याम ठीक हो गया .

रात के नौ बजे होगे ष्याम ने घर की षाँकल खट कटाई. तुलसी ने दरवाजा खोला. श्याम दरवाजे के भीतर आ पाते कि तुलसी ने कहा, ''कहाँ चले गये थे पूरा दिन गुजर गया, न खाना खाया न पानी पिया. ऐसी कौन सी मजबूरी आ गई थी, खबर भी नहीं दी. डाक्टर साहब ने कहा था, धूप में न निकलें, भूखे न रहें, अधिक मेंहनत का काम न करें तुम्हें अपनी चिन्ता नहीं है, अरे इन बच्चों के खातिर तो कुछ ध्यान रखा करो. देखो, कितने परेशान हैं बेचारे भूखे ही सो गये है''

श्याम ने भीतर आकर हाथ पैर धोये. भगवान के सामने दीपक रखकर बोले, ''हे भगवान, इतना ध्यान रखा है तू ने, लौटकर जिन्दगी दी है, अब बस इतनी सी कृपा कर दे बस उसे मिला दे। वह मुझे अपनी जान से भी बढ़कर प्यारी है. बड़ी मुश्किल से पाला है मैं ने उसे. वह दो दिन की थी कि उसकी माँ को सांप ने डस लिया था. मैंने उसे फोहों से दूध पिला पिलाकर बचाया है. वह मुझे अपने बच्चों की तरह ही प्यारी है. मैं उसके बिना जीवित नहीं रह पाऊँगा. तू बड़ा मालिक है तू सबका पालनहार है.''

श्याम की आंखों से आँसू बहते देख तुलसी ने कहा, '' अरे क्या बात है? क्या हुआ? मैं ने कभी तुम्हे रोते नहीं देखा है. आज ऐसी कौन सी मुशीवत आन पड़ी? मुझे भी तो बतलाओ.''

श्याम चुप था. श्याम की चुप्पी ने तुलसी को विचलित कर दिया. वह बड़ी चिन्तित हो उठी. श्याम से बोली, ''क्यो क्या बात है? मुझे भी तो बतलाओ किस मुशीवत में फँस गये हो।''

श्याम ने धीरे से कहा, तुलसी, मैं ने उसकी बहुत तलास की, पूरा इलाका छान डाला है, जहाँ जहाँ उम्मीद थी हर कहीं गया, कहीं भी पता नहीं चला. कोई सुराग नहीं लगा. बड़ा अचम्भा सा लग रहा है, कहाँ चली गई है वो, सुबह घर से क्या गई हवा हो गई ।''

तुलसी ने कहा, ''किसकी बात कर रहे हो ?''

श्याम ने कहा, ''तुलसी मैं क्या करूँ? कहाँ नही फिरा, किस किससे नहीं पूछा. कोई सुराग नहीं मिल रहा है.''

श्याम की हालत को देख तुलसी ने कहा, ''थोड़ा अपने आप को सम्हालो, धीरज रखो सब ठीक हो जायेगा। मुझे भी बतलाओ आखिर कौन है? क्या हुआ है? कुछ विचार करलें फिर तरीका निकालें. आप नाहक घबरा रहे हैं. आप अभी अभी बीमारी से उठे हैं.

यह आपके लिए ठीक नही है. मै ने खाना लगा दिया है. चलो खाना खालो''

श्याम ने खाने का कौर तोड़ा किन्तु वे उसे मुँह में नही ले पा रहे थे। उनका गला भर आया था, तुलसी ने समझाया, देखो जिन्दगी से बढ़कर कुछ नहीं है। तुम अपना ख्याल रखो, मुझे बतलाओ''। श्याम ने आँसू टपकाते हुए कहा, ''तुलसी वह सुबह से ही न जाने कहाँ चली गई. मैं उसे ढूढते ढूढते थक गया हूँ. उसके बच्चा देने के दिन पूरे हो रहे हैं। आज नहीं तो कल जनने वाली है। मेरी बीमारी में सब कुछ बिक गया है। बच्चों को सूखी रोटियाँ खाते देख मुझे अपने ऊपर नफ़रत होने लगी है. उससे बड़ी आशा लगी थी, वह जनकर मेरे बच्चो को दूध देगी, घर में खुशियाँ लौटेंगीं। मेरी ''गुलेंदी'' न जाने कहाँ चली गई मुझे छोड़कर।''

तुलसी ने श्याम को समझाते हुए कहा, ''आ जायेगी, कहाँ जायेगी? तुम उसकी चिन्ता में अपने आप को बीमार मत कर लो. सुबह पता कर लेंगे.''

सुबह होने के पहले ही श्याम गुलेंदी की खोज में निकल गया. शाम तक उन्हें उसका कोई पता नहीं चल पाया. हार थक कर घर लौट आये. तुलसी एवं रामू ने भी उसे हर जगह ढूँढ़ डाला. कहीं भी कोई पता नही चला.

चौपाल पर जगना ने कहा, ''कछरा के कुँआ की पाड़ में किसी की गाय फिसल कर गिर गई. बड़ी अच्छी गाय थी. शायद बच्चा भी उसके पेट में था. रामू कछरा की ओर दौड़ पड़े. पाड़ में गुलेन्दी को मरा हुआ पड़ा देख वे उससे लिपट कर रोने लगे. तू भी हमें छोड़कर चल दी. अरी हमसे ऐसी कौन सी गलती हुई थी, जो हमसे रूठ गई. बड़ी आशा थी तुझसे तू ही, बड़ी निर्दयी निकली.''

आँसुओं को बहाते हुए रामू घर आया. तुलसी से रोते हुए बोला ''माँ हमारी गुलेन्दी हमें छोड़कर चली गई है। वह कछरा के कुएँ की पाड़ में डली है.''

श्याम ने रामू के मुँह से गुलेन्दी की दुखद सूचना सुनी तो वह वहीं मूर्छित हो गया। घर में मातम छा गया। तुलसी ने लल्लू से कहा, लल्लू भईया, देखो कक्का को क्या हो गया है? लल्लू ने कक्का के मुँह पर पानी के छींटे मारे. थोड़ी देर बाद श्याम को होश आया. तुलसी ने उन्हें समझाते हुए कहा, ''ये दुनियाँ ऐसी ही है। कोई सदैव के लिए नहीं आया है। इतना मोह मत करो, अपने आप को सम्हालो, बच्चों का ख़्याल करो। अपने आप को सम्हालो. बच्चो का ख्याल करो. श्याम ने कहा, ''बच्चो का ही तो ख्याल कर रहा था. गुलेन्दी से बड़ी उम्मीद थी. वह भी हमारा साथ छोड़ गई.''

तुलसी ने कहा, ''तुम ठीक रहोगे तो सब ठीक हो जायेगा. मैं तुम्हारे सहारे बच्चों को रूखा सूखा खिलाकर पाल लूँगी. इन बच्चों को तुम्हारी बहुत जरूरत है.'

श्याम ने कहा, ''तुम ठीक कहती हो'' तुलसी, बुरे वक्त में सब साथ छोड़ जाते हैं, ठीक उसी तरह जैसे आज हमें छोड़कर हमारी गुलेन्दी चली गई.

तुलसी ने कहा, ''बुरा वक्त भी हमेशा नहीं रहता है, वह हमारी परीक्षा लेता है, अगर हमनें धीरज और साहस से उसका मुकाबला कर लिया तो वह भी हमारे साथ हो जाता है.

जोखिम उठाएं

यदि आप जीत जाते हैं तो आप प्रसन्न होंगे!
यदि आप हार जाते हैं तो आप समझदार बन जायेंगे!

कमला गोइन्का फाउण्डेशन के पुरस्कारों की घोषणा

कमला गोइन्का फाउण्डेशन के प्रबन्ध न्यासी श्री श्यामसुन्दर गोइन्का ने एक प्रेस विज्ञप्ति द्वारा सूचित किया है कि राजस्थानी भाषा एवं साहित्य के लिए अब तक उद्घोषित पुरस्कारों में सर्वाधिक राशि रु० 1,11,111/ (एक लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह रुपये) का 'मानुश्री कमला गोइन्का राजस्थानी साहित्य पुरस्कार' वर्ष 2013 के लिए मूर्धन्य राजस्थानी साहित्यकार श्री बी.एल.माली 'अशांत' को उनकी कृति 'बुरीगार निजर' एवं उनकी समग्र साहित्य साधना के लिए प्रदान किया जा रहा है.

श्री गोइन्का ने बताया कि इस वर्ष मूर्धन्य वयोवृद्ध राजस्थानी साहित्यकार श्री बैजनाथ पंवार को 'गोइन्का राजस्थानी साहित्य सारस्वत सम्मान', मूर्धन्य वरिष्ठ राजस्थानी पत्रकार एवं 'कुरजा' के संपादक डॉ० मनोहरलाल गोयल को 'रावत सारस्वत पत्रकारिता सम्मान' से, युवा साहित्यकारों के लिए घोषित 'किशोर कल्पनाकांत युवा साहित्यकार पुरस्कार' से युवा लेखिका सुश्री रीना मेनारिया को उनकी पाण्डुलिपि 'तकदीर रा आंक' के लिए पुरस्कृत किया जाएगा.

जीवन के उस पार

✍डॉ०अरुण कुमार आनंद
चन्दौसी, भीमनगर, उ.प्र.

भाग-०६

वहां पर भौतिक, पारिवारिक रिश्तों से कोई सरोकार नहीं है. कोई दादा-पापा नहीं सब समान है. अपने कर्मानुसार विचरण भोग कर रहे हैं. अतः जिज्ञासा स्वभाविक ही थी, दिव्यज्ञान प्राप्त कर उस पार के जीवन स्थिति का ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा मनुष्य को त्याग और आध्यात्म की ओर मोड़ देता है. मनुष्य योनि में जीवन भर उसने प्रभु नाम का स्मरण नहीं किया, अन्तिम पड़ाव पर आकर परमेश्वर के प्रति आशक्ति उत्पन्न होना कैसा? मृत्युभाव से आशक्ति की ओर प्रेरित करता है. जीवन भर बोया बबूल तो फल प्राप्ति की इच्छा कैसी? जो बोया है वही तो काटेगा? यही प्रकृति की नियति नियम है. परमेश्वर की इसमें कोई भूमिका नहीं है. कुछ दिव्य शक्तियों की साधना से जीवन के उस पार का ज्ञान प्राप्त हुआ, किंतु उन दिव्य शक्तियों में भी एक रूपता नहीं है. यह दिव्य शक्तिया भी विभिन्न नाम रूपों में बंटी हुई और खण्डित हैं. शायर मिर्जा गालिब के शब्दों में-
नूजुल-ए-दुनियां आकबत की खुदा जाने?'

अगर खुदा के बंदों को 'अकबत' की जानकारी न हो तो इबादत से क्या होता है? इबादत से मोझ की प्राप्ति संभव नहीं है. 'ब्रह्माण्ड सागर' ग्रंथ अध्याय १६, पृष्ठ ३४ में मृत्युपरान्त जीवन के उस पार 'अनन्तमार्ग' का भयावह वर्णन सविस्तार मिलता है. शायद इसे ही हिन्दू धर्म शास्त्रों में 'भवसागर' कहा गया है. इसी स्थिति का वर्णन 'गरूणपुराण' में भी मिलता है. क्या यह वर्णन वास्तव में सत्य है कि जिज्ञासा ने मृत्युपरानत के परलोक की स्थिति जानने के लिए प्रेरित किया. इसके लिए मृत्यु को प्राप्त करना आवश्यक था, और मृत्यु प्राप्ति के बाद दोबारा मृत्यु लोक में वापस लौटना संभव नहीं था तो फिर अनन्तमार्ग की यात्रा का वर्णन कैसे होगा? मृत्युपरान्त, पृतुलोक का भयावह कष्टप्रद दृश्य की कल्पना मात्र से हृदय कांप उठता है. ब्रह्माण्ड के वातावरण में चहु ओर फैला भयंकर अग्नि सागर से होकर गुजरना पड़ता है. हर मृत आत्मा को, इस त्रादशी से मुक्ति कैसे संभव है? मानव योनि की कर्मानुसार गतिविधियों से तो मुक्ति सम्भव ही नहीं है. पापकर्म की यातनाएं मृत्युपरान्त ही प्रत्येक प्राणी को भोगना होता है. इसका उपाय आज तक किसी को खोजे नहीं मिला है. यदि कोई यह सोचे कि हम निष्पापी हैं, हमने कभी जीवन में पाप किया ही नहीं, यह कदापि सम्भव नही हैं. इस मृत्यु लोक की तो विशात ही क्या है. मृत्युपरान्त आत्मा किसी भी लोक को प्रस्थान करे उसे प्रेतात्मा योनि के रूप में ब्राम्हाड में विचरण करना ही पड़ता है. किसी भी जीव प्राणी में तत्काल जन्म पाना इतना सरल व सहज नही है. पुण्य आत्माओं को भी स्वर्गलोक के भोग के बाद पुनः मृत्युलोक को प्रेत योनि में जन्म प्राप्त होता है. मृत्यु पश्चात उसे कहां जाना है. यह आज तक कोई जान नहीं पाया, सिद्ध साधू महात्मा भी नहीं जान पाए. सिद्ध महात्माओं का कथन है कि मृत्युपश्चात आत्मा कर्मानुसार दूसरी योनि में जन्म प्राप्त करती है. यह सत्य नहीं है, क्योंकि इसका साक्ष्य प्रमाण आज तक किसी को प्राप्त नहीं हुआ है. वास्तविकता इस कथ्य से अलग है. इन बातों का ज्ञान हमें तब हुआ जब हम बेदर्द सांसारिक लोगों के अत्याचार से निराश होकर सदगुरुदेव स्वामी परमानन्द के शरण में पहुंचे. मेरे पास न सिर छुपाने को छत थी, न जीने के लिए भोजन. जो मित्र थे उन्होंने भी आश्रय देने से मना कर दिया. यह २४ अक्टूबर १६६२ के बाद की स्थिति थी. उसके बाद उत्तरकाशी भुकम्प में सम्पूर्ण परिवार नष्ट होने के साथ ही सब कुछ समाप्त हो चुका था. केवल शेष बचा था यह नश्वर शरीर. चारो ओर अंधकार ही अंधकार था. न जीवन की किरणें नजर आ रही थी न सामने मृत्यु दिख रहा था. केवल एक विकल्प सामने था किसी सिद्ध महात्मा की शरण में जिन्दगी या मौत की प्राप्ति. जब गुरुदेव ने एकान्त में बुलाकर पूछा था-'तुम मेरे शरण में आये हों, कहो क्या चाहते हो? हर भक्त की इच्छा को दिव्य ज्ञान के प्रभाव से स्वतः जाने लेते हैं. मैंने गुरुदेव के प्रश्न के उत्तर में कहा-'प्रभू आप तो सिद्ध

महात्मा है आपको कुछ बताने की जरुरत नहीं. अन्तर्यामी महात्मा स्वतः ही अपने भक्तों की इच्छा जान जाते हैं.'

तो गुरूजी बोले-'तुम जो इच्छा लेकर आये हो वह मेरे तपोबल की परिधि से परे है. केवल परमात्मा ही तुम्हारी दो इच्छा में से एक को पूर्ण कर सकते हैं. यह कार्य मेरे बस में नहीं है. तुम मेरे पास जिन्दगी और मौत दो इच्छाएं लेकर आए हो? किसी भी इनसान की दो इच्छायें एक साथ पूर्ण नहीं होती, यह शक्ति तो स्वयं परमात्मा सचिदानन्द में भी नहीं है. मैं तो उनका केवल एक अदना सा दूत हूं. उपाय मार्ग मैं दिखा सकता हूं. वहां पहुंचने के बाद तुम्हारी दो इच्छाओं में से एक अवश्य पूर्ण होगी, मैं जहाा पर भेजूं जाओगे?' मैंने गुरुदेव को स्वीकृति दे दी. इनकार नहीं कर सकता था. **क्रमशः**

इस अद्भूत आध्यात्मिक श्रृंखला के सभी पात्र, स्थान, घटनाएं दृश्य संवाद-पृष्ठभूमि शब्द वाक्य वास्तविक है को यथावत प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है. काल्पिनकता से इसका कोई संबंध नहीं है.

कथन शैली एवं व्याकरण की अशुद्धियां होनी स्वभाविक ही है के लिए खेद है.

इस उपन्यास के तथ्यों पात्र-स्थान घटनाएं दृष्य संवाद और पृष्ठ भूमि शब्द वाक्यों से वर्तमान अध्यात्मिक समाज धर्म-मजहब एवं रस्मों रिवाज परम्परा और आध्यात्मि आस्था का उल्लधंन एवं मर्यादाओं का अपमान होता है. वह वर्तमान धार्मिक वास्तविकता को प्रमाणित नही करता. इन तथ्यों से प्रकाशक, संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है.

संतुष्ठी के लिए पाठक गण स्वयं लेखक से संपर्क करें. इस लेख श्रृखंला के संदर्भ में विवाद का न्यायक्षेत्र जनपद चन्दौसी, संभल ही मान्य होगा.

आवश्यकता है

1996 से निरन्तर प्रकाशित 'विश्व स्नेह समाज' मासिक को देश के विभिन्न शहरों में

- ब्यूरो प्रमुख,
- विज्ञापन प्रतिनिधियों

की जवाबी लिफाफे के साथ लिखें:

प्रबंध सम्पादक
विश्व स्नेह समाज (मासिक)
एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, उ.प्र., कानाफूसीः 9335155959
ईमेलः vsnehsamaj@rediffmail.com

हिन्दी हमारी अपनी मातृभाषा, राजभाषा व राष्ट्रभाषा है. हिन्दी दिवस मनाकर इसका अपमान न करें. हिन्दी अपनाये भ्रष्टाचार भगाये। -विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा जारी

जो दूसरों के ज़ख़्मों पर मरहम लगाता है उसके ख़ुद के ज़ख़्मों को भरने में देर नहीं लगती.

दाउजी

एक अंग का दान कर कई जिंदगियों को बचा सकता है व्यक्ति?

कहते है अंगदान से बड़ा कोई दान नहीं होता. इससे दूसरे व्यक्ति को नया जीवन मिलता है. कोई भी व्यक्ति एक अंग का दान करके कई जिंदगियों को बचा सकता है. हालांकि अंगदान को लेकर लोगों में डर है. लिवर, किडनी और हार्ट के ट्रांसप्लांट के साथ ही साथ पैनक्रियाज भी ट्रांसप्लांट हो जाते हैं. इनके अतिरिक्त छोटी आंत (इन्टेस्टाइन), फेफड़े (लंग्स) के साथ ही त्वचा (स्किन) व आंखों को भी दान किया जा सकता है। अंगदान दो प्रकार का होता है, अंगदान और टिशू दान। अंगदान में शरीर के अंदरूनी पार्ट जैसे-किडनी, फेफड़े, लिवर, हार्ट, इंटेस्टाइन, पैनक्रियाज आदि अंग आते हैं। वहीं टिशू दान में आमतौर पर आंखों, हड्डी और यहां तक कि त्वचा का दान होता है. आमतौर पर व्यक्ति की मौत के बाद ही अंगदान किया जाता है, लेकिन कुछ अंगदान और टिशू दान जीवित व्यक्ति के भी किए जा सकते हैं. अंगदान की प्रक्रिया-किसी व्यक्ति की ब्रेन डेथ की पुष्टि होने के बाद, डाक्टर उसके घरवालों की इच्छा से शरीर से अंग निकाल लेता हैं। इससे पहले सभी कानूनी प्रकियाएं पूरी की जाती हैं। इस प्रक्रिया को एक निश्चित समय के भीतर पूरा करना होता है। ज्यादा समय होने पर अंग खराब होने शुरू हो जाते हैं। अंग निकालने की प्रक्रिया में अमूमन आधा दिन लग जाता है। किसी भी अंग को डोनर के शरीर से निकालने के बाद ६ से १२ घंटे के अंदर को ट्रांसप्लांट कर देना चाहिए। कोई भी अंग जितना जल्दी प्रत्यारोपित होगा, उस अंग के काम करने की संभावना उतनी ही ज्यादा होती है। लिवर निकालने के ६ घंटे के अंदर और किडनी १२ घंटे के भीतर ट्रांसप्लांट हो जाना चाहिए। वहीं आंखें ३ दिन के अंदर दूसरे व्यक्ति के लगा दी जानी चाहिए. कोई भी शख्स मौत के बाद अपनी आंखों को दान करने का फैसला कर सकता है. इसके लिए कोई अधिकतम उम्र नहीं हैं। जिन लोगों की नजर कमजोर है, चश्मा लगाते हैं, मोतियाबिंद या काला मोतियाबिंद का आपरेशन हो चुका है वे भी अपनी आंखों को दान कर सकते हैं. डायबिटीज के मरीज भी आंखों को दान कर सकते हैं। रेटिनल या आप्टिक नर्व से संबंधित बीमारी के कारण अंधेपन का शिकार हुए लोग भी आंखों का दान कर सकते हैं। नेत्रदान का तरीका-मृत शरीर से आंखें लेने में छह घंटे से ज्यादा देर नहीं होनी चाहिए। इसके लिए मौत के बाद करीबी लोगों को आई बैंक को तुरंत सूचित करना जरूरी है। आई बैंक वालों के आने तक मृतक की दोनों आंखों को बंद कर उन पर गीली रुई रखनी चाहिए। अगर पंखा चल रहा है तो बंद कर दें। मुमकिन हो तो कोई ऐंटिबायटिक आई-ड्राप मरने वाले की आंखों में डाल दें। इससे इन्फेक्शन का खतरा नहीं होगा। सिर के हिस्से को छह इंच ऊपर उठाकर रखना चाहिए। जीवित व्यक्ति अपनी आंखें दान नहीं कर सकता। रेबीज, सिफलिस, हिपेटाइटिस या एड्स जैसी इन्फेक्शन वाली बीमारियों की वजह से मरने वाले लोग भी आंखें दान नहीं कर सकते. अंगदान करने के लिए उम्र की कोई सीमा नहीं है. १८ साल से कम उम्र के व्यक्ति को

अंगदान के लिए अपने माता-पिता या संरक्षक से इजाजत लेनी जरूरी है। अंगदान के लिए दो तरीके हो सकते हैं। कई एनजीओ और अस्पतालों में अंगदान से जुड़ा काम होता है। इनमें से कहीं भी जाकर आप एक फार्म भरकर दे सकते हैं कि आप मरने के बाद अपने कौन से अंग दान करना चाहते हैं। जो अंग आप चाहेंगे केवल उसी अंग को लिया जाएगा। संस्था की ओर से आपको एक डोनर कार्ड मिल जाएगा। आप दोस्तों, सगे-संबंधियों को अपने इस फैसले की जानकारी दे सकते हैं। फार्म बिना भरे भी आप अंगदान कर सकते हैं, यदि आपने अपने निकट संबंधियों को अपनी इच्छा के बारे में बता दिया है, तो वे आपकी इस इच्छा को पूरा कर सकते हैं। अंगदान करते वक्त परिजनों का कोई खर्च नहीं होता। शरीर के किसी भी अंग को दान करने वाला व्यक्ति शारीरिक रूप से स्वस्थ होना चाहिए। यदि वह शारीरिक रूप से स्वस्थ होगा तो डोनर का अंग जिस व्यक्ति के प्रत्यारोपित होगा, बेहतर तरीके से काम करेगा।

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान** द्वारा 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

01-कैलाश गौतम सम्मान-(हास्य/व्यंग्य रचना), 02-**डॉ.किशोरी लाल सम्मान**-(श्रृंगार रस की रचना), 03—**हिंदी सेवी सम्मान**- (विदेशी/हिन्दीतर भाषी नागरिक-किसी भी विधा की रचना), **04-राजभाषा सम्मान**-(सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए). **05-राष्ट्रभाषा सम्मान**-(हिन्दीतर क्षेत्र में हिंदी के उत्थान के लिए) **06-कला/संस्कृति/लोकनृत्य सम्मान**-(संगीत, नाटक, पेंटिग, नृत्य आदि के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए), **07-राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान**-(हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण) **08-राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान, प्रमाणिक विवरण), **09-सांस्कृतिक विरासत सम्मान**-(भारतीय/स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए, प्रमाणिक विवरण) **10-प्रवासी भारतीय सम्मान** (प्रवासी भारतीय जो हिंदी की किसी भी विधा में लिख रहे हों.) **11-युवा कहानीकार/व्यंग्यकार/ कवि/ग़ज़लकार/उपन्यासकार सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम) 12-काव्यश्री/कहानीश्री,/ग़ज़लश्री/दोहाश्री **13-विधि श्री** (विधि प्रक्रिया में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए), 14-**शिक्षकश्री** (शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए) **15-विहिसा अलंकरण**-हिन्दी की किसी भी विधा में प्रकाशित/अप्रकाशित 100 पृष्ठों की एक किताब के लिए,

उपाधियां उपाधियां प्रकाशित/अप्रकाशित कम से कम १०० पृष्ठीय कृति पर ही प्रदान की जायेगी. **साहित्य के क्षेत्र में**: साहित्य भूषण, साहित्य शिरोमणि, साहित्य सम्राट, कहानी सम्राट, कहानी रत्न, काव्य रत्न, काव्य श्री, काव्य शिरोमणि, दोहा श्री, ग़ज़ल श्री **समाज के क्षेत्र में**: समाज शिरोमणि, समाज रत्न, समाजश्री, **पत्रकारिता के क्षेत्र में**: पत्रकार शिरोमणि, पत्रकार रत्न, पत्रकारश्री

<u>**विशेष**</u>:१. प्रत्येक प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित विधा की एक रचना, विवरण के सम्बंध में प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा साथ एक पोस्ट कार्ड, एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और २०० रुपये मात्र का धनादेश/ बैंक ड्राफ्ट/ मल्टी सिटी चेक अथवा **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्याः 538702010009259** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा.

२. प्रतिभागी सभी साहित्यकारों को राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' की वार्षिक सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जाएगी. जो जनवरी 2015 से लागू होगी. किसी भी दशा में रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी.

३. रचनाओं के साथ मौलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. प्रत्येक पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर अवश्य करें. संस्थान को प्राप्त रचनाओं को प्रकाशित करने का अधिकार होगा. किताबों पर हस्ताक्षर न करे। सम्मान किसी भी परिस्थिति में डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा और न अपूर्ण प्रविष्टियों पर विचार किया जाएगा. प्रविष्टि भेजने के पूर्व मांगी वांछित सामग्री को सुनिश्चत करलें

४. प्रत्येक सम्मान के लिए एक विद्वजन का ही चयन किया जाएगा जो सर्वोच्च होगा. पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. इसमें किसी भी प्रकार की शिकायत स्वीकार्य नहीं होगी. किसी प्रकार के विवाद के संबंध में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा. सम्मान समारोह इलाहाबाद में आयोजित किया जाएगा. चयनित सभी विद्वद्जनों को डाक से/दूरभाष/ई-मेल के माध्यम से सूचना दी जाएगी.

अंतिम तिथिः ३० अक्टूबर २०१४

अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

सचिव, **विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,**
एल.आई.जी-93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, उ.प्र.
मो०: 09335155949, ईमेल-sahityaseva@rediffmail.com

सम्मान हेतु आवेदन पत्र

सेवा में
सचिव
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान
इलाहाबाद

विषयः ....सम्मान/उपाधि हेतु प्रविष्टि
संदर्भः
महोदय,

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले..सम्मान/उपाधि हेतु मैं अपना आवदेन प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरा आत्म विवरण निम्नवत हैः-

नामः ....पिता/पति का नामः...
पताः...
....
दू०/मो०संख्या..........................ईमेल-...........................
रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि का शीर्षकः..विधा....................वर्ष.........................
प्रेषित प्रतियाँ............. धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डीडी/चेक का विवरण, राशि.....................बैंक का नाम..........................
संख्या........................

मैं शपथपूर्वक यह प्रमाणित करता/करती हूं कि ०१ प्रेषित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि मेरी मौलिक है. इसमें किसी भी प्रकार का विवाद होने पर मैं स्वयं जिम्मेदार होऊंगा. ०२ मैंने संस्थान के पुरस्कार/सम्मान संबंधी नियम पढ़ लिए हैं और मुझे स्वीकार्य है.

भवदीय/भवदीया
हस्ताक्षर....................................
पूरा नाम....................................

सलंग्नक
०१ सचित्र जीवन परिचय-एक प्रति ०२ टिकट लगा लिफाफा/पोस्टकार्ड-एक ०३ धनादेश/बैंक जमा पर्ची छाया प्रति-एक
०४ सम्बन्धित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि- तीन प्रतियों में

'अपनी कलम' हेतु रचनाएँ आमंत्रित हैं

काव्य खंड के लिए के लिए 10 गीत/10ग़ज़ल/10 नई कविताएं/100दोहे **गद्य खण्ड** के लिए 5 लेख/5 संस्मरण **कहानी खंड** के लिए 5 कहानियां/10 लघु कथाएं

प्रत्येक खण्ड के लिए प्रत्येक रचनाकार को 15 पृष्ठ दिए जाएंगे. सहयोगी आधार पर प्रकाशित होने वाले इस संकलन के लिए रचना के साथ, सचित्र जीवन परिचय, व 1500/रुपये **15 दिसम्बर 2013** तक अपेक्षित है. (अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता **संःएस.बी. 538702010009259** में अथवा धनादेश/डी.डी. सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते हैं.) अपनी रचनाएं निम्न पते पर प्रेषित करें:

प्रसार सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी—93,
नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद—211011
इमेलः sahityaseva@rediffmail.com

आपकी डाक

आदरणीय द्विवेदी जी
सादर हरिस्मरण
पत्रिका की प्रति मिली. अध्ययन कर मन गद-गद, आत्मा तृप्त हुई. सभी लेख एवं रचनाएं श्रेष्ठ व स्तरीय है. घोर परिश्रम से किये सम्पादन के एक-एक पल को ढेरो बधाइ.

डॉ० जयसिंह अलवरी
सम्पादक-साहित्य सरोवर, दिल्ली स्वीट, सिरूगुप्पा, बल्लारी, कर्नाटक

अभिसंस्तवन प्रमुदित हृदय कुल गौरव
श्री गोकुलेश्वर कुमार जी
नित नवनीत सी खुशी मिले
घर आंगन में फूल खिले
स्नेह की सरिता बहे सतत
पथ आपका निष्कंटकमय हो
पग धरो जहां जहां कहीं
सफलता चरण चूमे वहीं
निर्भय हो विचरण करो
तुम्हे तनिक न भय हो
गाओ नेह के सरस गीत
बन जाओ सबके मनमीत
नये साज की नयी तान हो
जीवन गीत की नवलय हो
जन्मोत्तव मंगलमय हो.

वंशीलाल 'पारस', ओशोकुंज, ट-१४, बापूनगर, भीलवाड़ा, राजस्थान

आदरणीय महोदय,
पत्रिका के अंक निरन्तर मिल रहे हैं. आपके व्यक्तित्व पर छपा विशेषांक काफी अनूठा था. जिससे आपके अथाह योगदान सम्बंधी जानकारी मिली जो आप साहित्य उत्थान हेतु दे रहे हैं. ईश्वर आपको और सार्मथ्य प्रदान करें. **प्रोमिला भारद्वाज**
प्रबंधक, जिला उद्योग केन्द्र, मण्डी, हिप्र

जय श्रीराम
मई-जून का अंक डॉ. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी सम्पादक का एक व्यक्तित्व का प्राप्त हुआ. इस अंक के पढ़ने-समझने से श्री द्विवेदी जी के बारे में मालूम हुआ कि उन्होंने अपने मनोबल को फौलादी बनाकर अनुशासन का क्या मूल्य बताया है. वास्तव में केवल पत्रिका में सम्पादक का नाम ही देखते थे अब पता लगा कि द्विवेदी किसका नाम है. वास्तव में अपनी गणना वर्ष से नहीं मित्रों से करें. श्री डॉ. प्रणव पाण्डा जी ने सही लिखा है 'जिनका कर्म और मर्म दोनो उनकी रचनाधर्मिता में परिलक्षित होता है तथा लोक मंगल की भावना के लिये समर्पित योद्धा है.' श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी सही कहा है 'राष्ट्रभाषा के उत्थान-प्रचार प्रसार और नये आयाम प्रदान करने के लिए तन-मन-धन से समर्पित है. पत्रकारिता से जुड़े युवा वर्ग के प्रेरणा स्रोत हैं. विभिन्न विद्वानों-मनीषीयों लेखकों ने जो भी द्विवेदी जी के बारे में लिखा है वह सही है और जिन्होंने इनके बारे में नहीं समझा है वे एक बार इस अंक को अवश्य पढ़े.
तुम चलो चल पड़ेगा
संग तुम्हारे कारवां।
देख लो शायद तुम्हारे
दम से जलती है मशाल।
गंगा जमुना सरस्वती मिलकर बनाती जहां संगम
गोकुलेश्वर नाम एक है
तारा वहां जगमग।
पुनः श्री द्विवेदी जी को हार्दिक शुभकामनाएं व उनके दीर्घ स्वास्थ्य की प्रभु से कामनाएं.

देवदत्त शर्मा 'दाधीच'
छोटी खाटू वाले, १४३१, चाणक्य मार्ग, सुभाष चौक, जयपुर, राजस्थान

विश्व स्नेह समाज के पत्रिका के १३वें जन्मदिवस पर हार्दिक बधाई

पत्रिका की जन्मदिन की शुभ बेला,
लगा बहारों का है मेला।
आपकी खुशियों से खुश होकर,
मौसम भी लगता अलबेला।।
मौसम भी कैसा हो गया सुहाना,
क्योंकि पत्रिका का जन्मदिन था आना।
झूम झूम कर सारी दुनिया गाये,
जन्मदिन मुबारक आपको ये गाना।
देखो झूम रहा है सारा आसमान,
सदा खुश रहे आपका ये जहान।
खुश रहे आपका ये जहान।
खुशा रहो सदा दुआ है हमारी,
पूरे हो आपके हमेशा सारे अरमान।
यूं ही जन्मदिन आपका आताा रहे,
हर वर्ष आपको यूं ही हर्षाता रहे।
जीवन हो मस्ती से पूरित आपकी
गीत खुशी के यूं ही गाता रहे।

प्रो. अमिताभ पाण्डेय
डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह गौर, गीतांजली गीत, मालती मिश्रा, केवल कृष्ण पाठक, रिचा पाण्डेय, रोशनी अग्रवाल

हिन्दी व समाजसेवा प्रणम्य है

आदरणीय बन्धु,
पत्रिका का जून २०१३ अंक डॉ. गोकुलेश्वर द्विवेदी एक व्यक्तित्व प्राप्त हुआ. आपके व्यक्तित्व के विविध आयामों से परिचित कराता यह अंक एक लघु शोध ग्रन्थ बन गया है. इसमें आपने मेरी भी उपस्थिति दर्ज की, एतदर्थ बधाई, धन्यवाद, आभार.
द्विवेदीजी आपकी हिन्दी व समाजसेवा प्रणम्य है.

डॉ० अनिल शर्मा 'अनिल', म.न. ८२, मुहल्ला गुजरातियान, धामपुर-२४६७६१, बिजनौर, उ.प्र.

के.के. यादव व आकांक्षा नेपाल में सम्मानित

इंटरनेट पर हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार और ब्लॉगिंग के माध्यम से देश-विदेश में अपनी रचनाधर्मिता को विस्तृत आयाम देने वाले प्रयाग के युगल ब्लॉगर दम्पति कृष्ण कुमार यादव और उनकी पत्नी आकांक्षा यादव को काठमांडू, नेपाल में आयोजित अंतरराष्ट्रीय ब्लॉगर सम्मेलन में क्रमशः 'परिकल्पना साहित्य सम्मान' एवं 'परिकल्पना ब्लॉग विभूषण' से नवाजा गया. नेपाल की विषम राजनीतिक परिस्थितियों के चलते मुख्य अतिथि नेपाल के राष्ट्रपति डॉ० राम बरन यादव की अनुपस्थिति में यह सम्मान नेपाल सरकार के पूर्व शिक्षा व स्वास्थ्य मंत्री तथा संविधान सभा के अध्यक्ष अर्जुन नरसिंह केसी ने दिया. इस सम्मेलन में एकमात्र बाल ब्लॉगर के रूप में गर्ल्स हाई स्कूल, इलाहाबाद की कक्षा १ की छात्रा अक्षिता ने भी भाग लिया.

इस अवसर पर यादव दम्पति सहित देश-विदेश के हिंदी, नेपाली, भोजपुरी, अवधी, छत्तीसगढ़ी, मैथिली आदि भाषाओं के ब्लॉगर्स को भी सम्मानित किया गया. परिकल्पना समूह द्वारा आयोजित यह समारोह १३-१५ सितम्बर के मध्य काठमांडू के लेखनाथ साहित्य सदन, [illegible] के सभागार में हुआ.

इस अवसर पर 'न्यू मीडिया के सामाजिक सरोकार' सत्र में प्रमुख वक्ता के रूप में कृष्ण कुमार यादव ने बदलते दौर में न्यू मीडिया व ब्लॉगिंग व इसके सामाजिक प्रभावों पर विस्तृत चर्चा की, वहीं 'साहित्य में ब्लॉगिंग की भूमिका' पर हुयी चर्चा को आकांक्षा यादव ने मूर्त रूप दिया.

गौरतलब है कि इलाहाबाद परिक्षेत्र के निदेशक डाक सेवाएं पद पर पदस्थ कृष्ण कुमार यादव एवं उनकी पत्नी आकांक्षा यादव एक लंबे समय से ब्लॉग और न्यू मीडिया के माध्यम से हिंदी साहित्य एवं विविध विधाओं में अपनी रचनाधर्मिता को प्रस्फुटित करते हुये राष्ट्रीय ही नहीं, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी व्यापक पहचान बना चुके हैं. पत्रिका परिवार की तरफ से इस दम्पत्ति को हार्दिक बधाई.

हिन्दी में वैश्विक भाषा बनने की पूरी क्षमताः के.के.यादव

हिन्दी पखवाड़ा के अवसर पर पोस्टमास्टर जनरल, इलाहाबाद परिक्षेत्र कार्यालय में 'बदलते परिवेश में हिन्दी की भूमिका' विषय पर एक संगोष्ठी एवं विजेताओं का पुरस्कृत करने का कार्यक्रम २० सितम्बर २०१३ को आयोजित किया गया. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि निदेशक, डाकसेवाएं एवं साहित्यकार कृष्ण कुमार यादव थे जिनका स्वागत कार्यक्रम की अध यक्षत कर रहे प्रवर डाक अधीक्षक इलाहाबाद मंडल श्री रहमतउल्लाह ने शाल ओढ़ाकर व स्मृति चिन्ह देकर किया.

इस अवसर पर सहायक निदेशक(राजभाषा) टी.बी.सिंह व विनय ने भी अपने विचार व्यक्त किए तथा विनीत टण्डन, राजेन्द्र प्रसाद, जगदीश कुशवाहा, अजय प्रकाश, स्वप्न कुमार, आर.के. श्रीवास्तव, जगदीश कुशवाहा, इजलेश कुमार, रामबहादुर को श्री के.के.यादव विभिन्न प्रतियोगियाओं के लिए सम्मानित किया. कार्यक्रम का संचालन बृजेश कुमार शर्मा ने किया तथा आभार तेज बहादुर सिंह द्वारा ज्ञापित किया गया.

हिंदी सेवा के लिए सम्मानित किये गये दर्जनों कलमकार

- **विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, सोनभद्र ईकाई व मीडिया फोरम ऑफ इण्डिया के संयुक्त तत्वावधान में हिन्दी पखवाड़ा**

सोनभद्र, (ब्यूरो)। हिंदी के विकास एवं सर्वद्धन में उल्लेखनीय योगदान प्रदान करने वाले कलमकारो, शिक्षाविदो व साहित्यकारो को विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान एवं मीडिया फोरम आफ इण्डिया सोसायटी के संयुक्त बैनर तले २२ सितम्बर २०१३ को को प्रकाश जीनियस इण्टर कालेज सभागार में सम्मानित किया गया। हिन्दी पखवाड़ा के अन्तरगत सोनांचल के कलमकारों ने भी चतुर्थ साहित्य यात्रा के अंतर्गत 'वर्तमान में हिंदी के प्रति युवाओं का दायित्व' विषयक संगोष्ठी आयोजित कर न सिर्फ हिंदी व हिंदुस्तान के उत्थान की बात की, बल्कि दर्जनों पत्रकारो साहित्यकारों व शिक्षाविदो को सम्मानित कर हिंदी के प्रति उन्हें और तत्परता के साथ अपने क्षेत्र में कार्य करने के लिए उत्प्रेरित किया. उल्लेखनीय है कि आकाशवाणी ओबरा के कार्यक्रम प्रभारी राजेश कुमार गौतम के मुख्य आतिथ्य एवं प्रख्यात साहित्यकार पारसनाथ मिश्र की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में अमर उजाला के (डाला व ओबरा) संवाददाता मनोज कुमार तिवारी व अभिषेक पाण्डेय, निष्पक्ष समाचार ज्योति ब्यूरोचीफ व क्राइम रिपोर्टर सनोज कुमार तिवारी व मुकेश कुमार सिंह, जनवार्ता के जिला संवाददाता ज्ञानेश्वर श्रीवास्तव, समाचार धारा के जिलासंवाददाता चन्द्रमणि शुक्ला, जगप्रकाश के जिलासंवाददाता संतोष कुमार नागर, संमार्ग के जिलासंवाददाता विवेक कुमार पाण्डेय, कैमूर टाइम्स के प्रधान संपादक विजय शंकर चतुर्वेदी, सोनघाटी पत्रिका के संपादक दीपक कुमार केसरवानी, वाह क्या बात है के संपादक डा० एके गुप्ता,

घाटी का दर्द के संपादक कपिल देव पाण्डेय, रहस्यमाया के ब्यूरोचीफ विद्या शंकर गुप्ता, शिक्षाविद व साहित्यकार ओम प्रकाश त्रिपाठी, चन्द्रकांत शर्मा, गोविंद अग्रहरि, समर नफीस सैम, अवधेश कुमार विशाल, राजेश द्विवेदी, समाजसेवी संदीप चंदेल, माधव सिंह यादव, संतोष पाण्डेय सहित लगभग दो दर्जन विद्वतजनों को साल, स्मृती चिह्न व प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस

मौके पर व्यापार मण्डल के जिलाध्यक्ष रतनलाल गर्ग, प्रकाश जीनियस के प्रबंधक राजेन्द्र प्रसाद जैन, कवि एवं साहित्यकार राजेन्द्र तिवारी उर्फ लल्लू तिवारी, हिंदी प्रवक्ता डा० सुषमा तिवारी, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के सचिव डा० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, मीडिया फोरम आफ इण्डिया सोसायटी के महासचिव महेन्द्र अग्रवाल, आग अंगारे के संपादक के.एन. सिंह, रामजी दूबे, विमल जालान, विमल अग्रवाल, सेराज हुसैन, चिंता पाण्डेय, नन्दकिशोर, ब्रजेश शुक्ला, मोइनुद्दीन मिंटू, शशि चौबे, नीरज पाठक, अजीत सिंह, विकास वर्मा, अजय श्रीवास्तव, कमाल अहमद, विजय कुमार अग्रहरि सहित जनपद के विभिन्न अंचलो से भारी संख्या में सम्मानित जन उपस्थित रहे। संचालन कार्यक्रम संयोजक एवं वरिष्ठ पत्रकार मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी ने किया। अतिथियों का स्वागत राष्ट्रपति से शिक्षक पुरस्कार प्राप्त

ओम प्रकाश त्रिपाठी ने किया तथा आभार लेखिका रचना तिवारी ने व्यक्त किया.

विनोद बब्बर की दो पुस्तकों का लोकार्पण

नई दिल्ली। 'यात्रा वृत्त सांस्कृतिक आदान-प्रदान में सहायक होते हैं लेकिन आजकल कविता कहानी तो बहुत लिखी जा रही है परंतु इस विधा की उपेक्षा हो रही है. यह संतोष की बात है कि डॉ. विनोद बब्बर की पुस्तक 'इब्सन के देश में' के बाद 'इन्द्रप्रस्थ से रोम' हमारे बीच है' उक्त बातें डॉ. बालशौरि रेड्डी का जो भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद एवं राष्ट्र-किंकर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित समारोह में कहीं.

विनोद बब्बर की सद्य प्रकाशित दो पुस्तकों इन्द्रप्रस्थ से रोम (यात्रा वृत) तथा लक्ष्मणरेखा (निबन्ध संग्रह) का लोकार्पण समारोह में डॉ. कमल किशोर गोयनका ने लक्ष्मणरेखा की मीमांसा करते हुए विश्व की श्रेष्ठ संस्कृति की के सम्मान की रक्षा को वर्तमान की

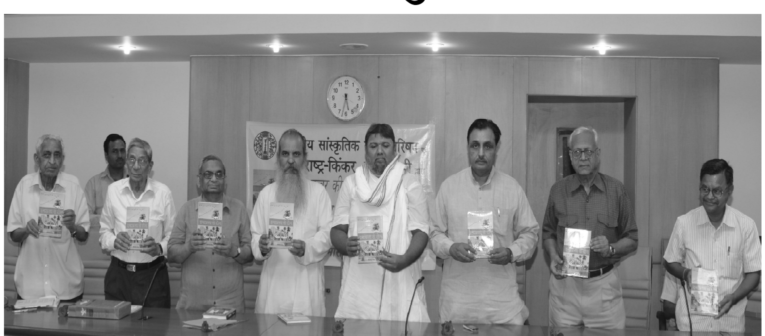

आवश्यकता बताया. पुस्तक पर डॉ. विमलेश कांति वर्मा, डॉ. सुंदरलाल कथूरिया, श्री के.डी.चन्दोला, डॉ. परमानंद पांचाल, डॉ. हरि सिंह पाल, डॉ. महेन्द्र सिंह चौहान, डॉ. गौरांगशरण देवाचार्य ने भी अपने विचार व्यक्त किए. कार्यक्रम का संचालन डॉ. महेन्द्रपाल काम्बोज ने किया. राष्ट्रकिंकर के संपादक डॉ.विनोद बब्बर ने विद्वानों का उनके अभिमत के लिए आभार व्यक्त किया.

गलती का पछतावा

पन्ना शहर में छगनलाल नाम का एक व्यापारी था. जिसकी फैक्ट्री चलती थी. उस फैक्ट्री में जूते बनते थे. हर वर्ष वह नई डिजाइन निकाला करता था. एक बार उसने फैक्ट्री वालों से कहा कि कुछ अच्छी डिजाइन निकालों जिससे अधिक बिक्री हो. डिजाइन बनाने वाले को आर्डर दिया. कुछ दिनों के बाद नया माल फैक्ट्री में तैयार हुआ. उसमें से एक जोड़ी सेठ के घर भेजा गया. सेठ को वह डिजाइन बहुत पसंद आयी. सेठ जी ने अपने बरामदे में वे जूते रख दिये. सेठ जी के घर में काम लगा हुआ था. जिसमें कई मजदूर काम पर लगे हुए थे. उनमें से एक मजदूर जूता उठाकर ले गया. सेठजी ने देखा कि जूते नहीं है तो उसने चौकीदार को बुलाया व पूछताछ की. चौकीदार ने कहा मुझे नहीं मालूम. मजदूरों को बुलाकर पूछताछ की गई पर किसी ने नहीं बताया. सेठ जी ने अगले दिन सभी मजदूरों को बुलाया और कहा सभी लोग अपना हिसाब कर लो, कल से दूसरे मजूदर आयेंगे. सेठ जी सभी मजदूरों का हिसाब करने लगे. दिनेश नाम के एक मजदूर ने सोचा मेरी वजह से सभी मजदूरों की छुट्टी हो रही है. क्यों न हम अपनी गलती को स्वीकार कर ले और उसने सेठ जी से अपनी गलती उजागर की. सेठजी ने सभी मजदूरों को फिर काम पर लगा लिया और दिनेश को क्षमा कर दिया. आज के बाद ऐसी गलती फिर नहीं होगी.

📖 **श्री बिहारी 'सागर'**, सागर, म.प्र.

प्रश्न

सुरेखा और दीपू पति पत्नी थे. दीपू बेटा चाहता था लेकिन सुरेखा एक के बाद एक करके दो बेटियों की मां बन गई थी. इसके लिए पति सुरेखा को जिम्मेदार मानकर मारता पीटता और प्रताड़ित करता. दो बेटियों के बाद सुरेखा को बेटा हो गया. जब से सुरेखा ने बेटे को जन्म दिया है पति उससे बहुत प्यार करता है.

सब बेटा चाहते हैं, लेकिन बेटा पैदा कौन करता है? अगर औरत ही नहीं रहेगी तो बेटा पैदा कौन करेगा?

दुल्हन

'विदेश भेजने से पहले इसकी शादी कर दो.' रेखा ने सुन रखा था जो लड़के विदेश जाते हैं, अपने साथ विदेशी दुल्हन लेकर लौटते है. रेखा नहीं चाहती थी कि उसका इकलौता बेटा भी ऐसा करे. इसलिए उसने पति को अपने बेटे महेश की शादी करने की सलाह दी थी.

दीनानाथ ने महेश की शादी माया से कर दिया. शादी के बाद एक महीने तक माया के साथ रहकर महेश अमेरिका चला गया. जाने से पहले महेश ने वादा किया था, जल्दी माया को लेने आयेगा. माया, महेश के आने का इंतजार करने लगी.

पति नहीं उसका संदेश आया था. महेश ने वहां की लड़की से शादी करके वहीं बसने का निर्णय कर लिया था.

महेश ने विदेश में दूसरी दुल्हन कर ली थी, लेकिन जो दुल्हन रेखा और दीनानाथ के पास थी. उसके भविष्य का प्रश्न उनके सामने आ खड़ा हुआ था.

📖 **किशन लाल शर्मा**, आगरा, उ.प्र.

आओ कुछ सीखें इस तस्वीर से

एक तरफ जहां मानवता/इंसानियत खत्म होती जा रही है. जानवर व इंसान घास-फूस की तरह कांटे जा रहे हैं. मांए अपने शरीर को व्यवस्थित दिखाने के लिए अपने बच्चों को डब्बे के दूध के सहारे पाल पोस रही हैं. वही दूसरी तरफ यह महिला अपने बच्चे व एक जानवर के बच्चे को दूध पिला रही है जिसकी मां मर गई है. दूनिया में मानवता को ऐसे ही लोग जिंदा रक्खे हुए हैं.

ग़ज़लों के आईने में: वन्दना वीथिका

ग़जल की दुनिया अब केवल उर्दू शायरों की दुनियां नहीं रही. महिलाओं ने भी ग़ज़लों के द्वार पर दस्तक दीं, उनमें एक नाम है बिहार की डॉ० वन्दना वीथिका की, जिनक पुस्तकें 'मालूम नहीं अंजाम' और 'बेवजह याद दिलाते हो....' इस नवोदित ग़ज़लकारा की शायरी में एक अजीब-सी कशिश है जो पाठक को छटपटा देती है-

'ग़ज़ल नहीं जिस्म से मेरे,
रूह ही है यह अलग हुई,
अब क्यूं मुर्दो को ज़िन्दगी की,
बेवजह याद दिलाते हो।।(बेवजह...४८)

'वन्दना जी मानती है कि 'नारी अब भी परतंत्र है. पता नहीं, नारी होने का अभिशाप मुझे भी कब तक भुगतना पड़ जाये, मेरे द्वारा ग़ज़ल लिखा जाना कब किसको नापसन्द हो जाये, दरअसल मेरी पसन्द के कई चिराग बुझ चुके हैं और मेरी ग़ज़लों की लौ भी अब थरथरा रही है. पर मालूम नहीं कब और किधर से कोई झोंका आये और उसे बुझा डाले. यदि किस्मत ने चाहा तो फिर मिलूंगी, उम्मीदों की किसी शाम ग़ज़लों का गुलदस्ता लिये'

(मालूम नहीं अंजाम-अन्तिम पृष्ठ)

डॉ० वन्दना वीथिका का नाम अब किसी परिचय का मुंहताज नहीं है, इनकी लेखनी ने हिन्दी साहित्य की विधाओं में सफलता हासिल की है लेकिन अपना ग़म गलत किया है, इन्होंने ग़ज़लों के बहाने ही.

ऐसा लगता है कि संकलित ग़ज़लें मानों कवयित्री की रूह है. उनकी ग़ज़लों में कथ्य एवं शिल्प का सुमेल है. भाषा उर्दू की ओर झुकी हुई उर्दूनुमा, शब्दों का चयन प्रभावित करने वाला है. तुकबन्दी नहीं है, कहने की प्रक्रिया साफ-सुथरी है.

ऐसा हो भी कैसे नहीं, संवेदनशील हृदय और कल्पना की असाधारण शक्ति प्रकृति से प्राप्त है. साहित्य-सेवा इन्हें विरासत में मिली है. पारिवारिक जीवन के प्रति आस्था वंदनाजी का सबसे बड़ा सम्बल है. इसी ने उन्हें सृजन-क्षमता दी है और इसी कारण एक नारी के जीवन की घुटन को महसूस करते हुए भी उनकी रचनाओं में आशा का स्वर छलक उठता है. गहन अध्ययन, सूक्ष्म निरीक्षण ओर विचारों की सहज अभिव्यक्ति इनकी विशेषताएं हैं. इनकी ग़ज़लें ज्यादातर ग़म का इज़हार है यह ग़म जितनी खुशी का नहीं उतना दुख का है. नारी हृदय की कसक का है, ये स्वाभाविक भी है क्योंकि मायके और ससुराल के दो पाटों के बीच स्त्री पिसती रही है, झेलती रही है और इसके लिए विवशता ही उसकी जिन्दगी रही है, इनकी ग़ज़लें विवशता का ही बयान करती है. रंग, रोशनी, रूप, गंध दृश्य एक दूसरे में गुम्फित से लगते हैं और सब मिलाकर एक ध्वनि पैदा करते हैं जिसमें साफ प्रतिध्वनित होता है-

'ग़ज़लों के आईने में हमें आकर देखिए,
हो सके तो सूरत अपनी पढ़ कर देखिए।

इनकी पुस्तकें उत्कृष्टता का मापदंड हैं. वन्दना जी की साहित्य साधना चलती रहे, तो निश्चयही अपने परिवार का नाम रोशन करती रहेंगी. सार ही मनुष्य के मस्तिष्क में भी प्रवृत्ति पोषित कर दी है.

समीक्षकः डॉ. कल्याणी कुसुम सिंह
मूल्यः १५० रुपये
लेखिकाः डॉ० वन्दना वीथिका
पुस्तक का नामः मालूम नहीं अंजाम, बेवजह याद दिलाते हो....

पूजा, नमाज़, अरदास, बिना प्यार के व्यर्थ

'शब्द-शिल्प' में शिल्पी जी की ये पंक्तियां अपने आपमें उनकी 'शिल्प' कला को बयां करती है. शिल्पी जी शब्दों के अच्छे शिल्पी है. कुल 38 रचनाओं से परिपूर्ण संग्रह की शुरूआत 'स्तुति' से होकर स्वार्थ पर जाकर विराम लेती है. आज की परीक्षा व्यवस्था पर कड़ा प्रहार करते हुए शिल्पी जी ने लिखा है-

वादन होत ही कक्ष में,
लियो पुस्तिका खोल।
आता जाता है नहीं,
लियो निरीक्षक मोल।।

शहादत के रूप में प्रसिद्ध कर्बला पर अपने शब्दों की कला को 'उपरान्त कर्बला' और कर्बला में बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है-

हुसैन नफार के गये, सत्ता मज़ीद की।
सिद्धान्त जीवन कर गये वे उपरान्त कर्बला।।

असहनीय पीड़ाएं सही हुसैन ने,
शहीदों की लाशें ढोयी हुसैन ने।।

आज के अर्थ प्रधान युग पर नेक सलाह देते हुए लिखते है-

पैसा है गर पास में,
सब जग पूछत तोय।
सोच समझकर बॉटियें,
नहि पछतावा होय।।

इस संग्रह में ग़ज़ल, हाईकू, बालगीत आदि का मिश्रण. शिल्पी को इस संग्रह के लिए हार्दिक बधाई.

समीक्षकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी